॥ श्री हरिः॥

॥ श्री धर्मसम्राट् विजयते ॥

श्री करपात्रप्रिया ग्रन्थमाला

एकादश-पुष्प

प्रदोषपूजा पीयूष

प्रणेता

समर्थश्री त्र्यम्बकेश्वर चैतन्यः

प्रधान सम्पादकः

डॉ. गुणप्रकाश चैतन्यः

सम्पादकमण्डल

आचार्य हेमन्त व्यास, आचार्य राजू शर्मा, आचार्य देवेश

श्री धर्मसम्राट् प्रकाशनम्

पंजीकरण संख्या :- 201801026024418

प्रथम संस्करण :- 2019

प्रकाशन तिथि :- विक्रमी सम्वत् 2076

अग्रिम प्रकाशनार्थ सहयोग :- 20 रुपये

प्रकाशक:-

श्रीधर्मसम्राट् प्रकाशनम्

धर्मसंघ महाविद्यालय (प्रबलजी महाराज की कुटिया)

कुटिया रोड भादरा, जिला - हनुमानगढ़ (राजस्थान)

सम्पर्क-सूत्र - 9892934713, 8005500539

प्राप्तिस्थान:-

धर्मसंघ महाविद्यालय

(श्री प्रबलजी महाराज की कुटिया)

कुटिया रोड भादरा, जिला - हनुमानगढ़ (राजस्थान)

सम्पर्क-सूत्र - 9414578938, 9024357116

।। निवेदनम् ।।

कलौ हि पार्थिवीपूजा कलौ देवो महेश्वरः।
रूद्रं एकत्वं आहुः वै शाश्वतं पुराणम् (शिवाथर्वशीर्ष)

धर्म-मर्म-जिज्ञासा-परिपूर्णमानस महानुभाव! भगवानशिव को ही एक शाश्वत पुराणपुरुष कहा जाता है। भगवान शिव की महिमा, उनका भक्तवात्सल्य, उनका भोलापन, उनकी वरप्रदायकता, सर्वदेवपूज्यता विलक्षण है। श्रीकर, उपमन्यु, दधीचि, कुबेर, चंद्र, रावण, बाण से लेकर भगवान श्रीराम, श्रीकृष्ण, श्रीमन्नारायण तक उनके उपासकों के समुज्ज्वल उत्कर्षमय प्रकाश से ब्रह्मांड प्रकाशित है।

श्री रामचरित मानसकार कलिपावनावतार महात्मा तुलसीदासजी भी कहते हैं कि शिवकृपा बिना अभीष्टफल की संप्राप्ति संभव ही नहीं है चाहे कितने भी योग, यज्ञ, जप साधन कर लीजिए।

इच्छित फल बिनु शिव अवराधे।
लहहि कि कोटि जोग जप साधे।।

जब तक मनुष्य पूर्व जन्म अथवा वर्तमान जीवन में शिवोपासना द्वारा शिवकृपा अर्जित नहीं करेगा, तब तक उसे सुख शांति समृद्धि प्राप्त न होगी, सन्ताप का शमन न होगा।

न यावदुमानाथ पादारविन्दं,भजन्तीह लोके परे वा नराणाम्।
न तावत् सुखं शान्तिसन्तापनाशं,प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम्।।

बहुत समय से हार्दिक इच्छा थी कि धर्मशास्त्रीय मर्यादानुसार प्रदोषकालीन पार्थिवेश्वर शिवपूजा अथवा नित्य शिवपूजा की कोई सरलतम, सर्वजन-ग्राह्य पद्धति प्रकाशित हो ऐसा विचार चल रहा था। जिसका

सहारा लेकर भावुक शिवभक्त स्वयं को (शिवो भूत्वा शिवं यजेत् देवो भूत्वा देवं यजेत्) समतामय शिवत्व से संयुक्त कर सकें, इसलिए हमारे माननीय सम्पादक महोदय डॉ. गुणप्रकाश चैतन्यजी महाराज तथा श्री प्रणव चैतन्यजी महाराज के विशेष आग्रह तथा आचार्य देवेशजी के अति उत्साह से यह कार्य सम्पन्न होकर आपके हाथों में आया है। लेखनोपासना के इस उपक्रम से सनातन परम्परा का पोषण हो तथा सभी मनुष्य सन्मार्ग का आश्रय लेकर मानवजीवन को सार्थक करें।

इसी मंगल कामना के साथ देवाधिदेव महादेव नारायणोपास्य नारायणोपासक भगवान शिव के चरणारविन्द में शब्दप्रवाहरूपी गंगा विश्राम लेती है।

भवदीय:

त्र्यम्बकेश्वरश्चैतन्य:

विषय सूची

क्र. स.	प्रकरण	पृ. स.
१.	पार्थिव पूजा का सरल विधान	०१
२.	श्रीशिवमहिम्नः स्तोत्रम्	२३
३.	बिल्वाष्टकम्	३४
५.	शिव-अष्टोत्तरशत-नामावली	३८
६.	शिवारार्तिक्यम्	४३
४.	शिव-स्तुति	४७
७.	श्री शिव-आरती	४९
८.	प्रार्थना	५०
९.	शिवपंचकम्	५१
१०.	श्रीविश्वनाथपंचकम्	५२
११.	श्री शिव-पंचाक्षर-स्तोत्रम्	५३
१२.	शिवसहस्रनामावली	५५
१३.	विशेष-आग्रह	६८
१४.	प्रश्नोत्तर	६९

॥ श्रीहरिः॥

शिव पूजनकर्ता स्नान आदि करके शुद्ध वस्त्र (भारतीय वस्त्र यथा संभव धोती दुपट्टा) पहनकर पूजा घर में प्रवेश करें। पूजापात्र सीफ करके शुद्ध जल भरें। पुष्प, फल, चन्दन, रोली आदि पूजा सामग्री तैयार कर के पवित्र आसन पर बैठें। (धोती लांग लगाकर ही पहने, दुपट्टा ऊपर ओढें, ध्यान रहे सिले वस्त्र न पहने)

तीन आचमन- (बाएं हाथ से आचमनी में जल भरकर दाहिने हाथ में जल लेकर पियें) **ह्रीं केशवाय नमः, ह्रीं नारायणाय नमः, ह्रीं माधवाय नमः।** तदनन्तर **ह्रीं हृषीकेशाय नमः** बोलकर हाथ धो लें।

ध्यानदेने हेतु-

१-पूजनमें जिस सामग्रीकी कमी हो, उसकी पूर्ति मानसिक भावनासे करनी चाहिये- **'असम्पन्नं मनसा सम्पादयेत्'।**

जैसे- **आसनं मनसा परिकल्पयामि, पुष्पमालां मनसा परिकल्पयामि इत्यादि।**

२- दूसरा विकल्प है, उस-उस सामग्रीके लिये अक्षत-पुष्प चढ़ा दे-

तत्तद् द्रव्यं तु संकल्प्य पुष्पैर्वापि समर्चयेत्।
अर्चनेषु विहीनं यत् तत्तोयेन प्रकल्पयेत्॥

३- केवल नैवेद्य चढ़ानेसे अथवा केवल चन्दन, पुष्प चढ़ानेसे भी पूजा मान ली जाती है।

केवलनैवेद्यसमर्पणेनैव पूजासिद्धिरिति।

गन्धपुष्पसमर्पणमात्रेण पूजासिद्धिरित्यपि पूर्वे। (आचारेन्दु)

पवित्रीकरणम्- जल बाएं हाथ में लेकर दाहिने हाथ की अंगुलियो से अपने ऊपर व पूजन सामग्री पर छिड़कें, भावना करें कि इस जल से मेरा तन-मन पवित्र हो रहा है।

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

आसन शुद्धि- निम्नलिखित मन्त्र उच्चारण कर अपने आसन के चारों ओर जल छिड़कें।

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि! त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम्॥

स्वस्ति तिलक- माथे पर भस्म, चन्दन, रोली लगायें।
(चन्दन लगाते समय अधोलिखित श्लोक बोलें)

श्रीप्रदं धीप्रदं चैव भालस्थं चन्दनं शुभम्।
शान्तिदं शक्तिदं दिव्यं तिलकं चारु धारयेत्॥

(भस्म लगाते समय अधोलिखित श्लोक बोलें)

सर्वपाप-निवृत्यर्थं पात्रता-प्राप्ति-हेतवे।
पुण्यप्रदं शिवं शुभ्रं विभूतिं धारयाम्यहम्॥

रुद्राक्षमालाधारण- रुद्राक्ष की माला को अपने गले में पहनें।

दिव्यं भव्यं पवित्रं च रुद्राक्षं धारयेत् बुधः।
रुद्राक्ष-धारणेनैव शिवतामेति मानवः॥

पवित्री धारण- दोनों हाथों में कुशा ताम्र रजत स्वर्ण या मौली की पवित्री बनाकर छोटी अंगुली के समीप वाली अनामिका अंगुली में पहन लें।

दर्भ-धातुमयं वापि पवित्रं परिकल्पयेत्।
धारयेत् धर्म-वृद्ध्यर्थं हरिस्मरण-पूर्वकम्।।

शिखा बन्धन- अपनी चोटी (शिखा) में गांठ लगावें। चोटी ना हो तो उस स्थान को स्पर्श कर लें। कुशा दूर्वा मौली शिखा स्थान पर रखें। तदनन्तर **ह्रीं नमः शिवाय** बोलकर हाथ धो लें।

दीप प्रज्वलन- (अपने सीधे हाथ की ओर गोघृत-दीप तथा अपने बाएं हाथ की ओर तैल-दीप चावल पर स्थापित कर प्रज्वलित करें। तदनन्तर **ह्रीं नमः शिवाय** बोलकर हाथ धो लें।

सूर्यार्घ्य- एक ताम्बे के लोटे में या अर्घ्यपात्र में जल, रोली, लाल पुष्प, चावल डालकर सूर्य भगवान को अर्घ्य दें। उसके बाद उस जल को नेत्रों से लगा लें।

आयुरारोग्यमैश्वर्यं ज्ञानविज्ञानसंयुतम्।
प्रदेहि सर्वदातुष्ट! अनेनार्घ्येण भास्कर!।।
ह्रीं भगवते सूर्यनारायणाय नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

भूमिपूजनम्- भूमि पर त्रिकोण बनाकर हाथ में गन्धाक्षत-पुष्प लेकर पूजन करें।

धरा धरति धर्मज्ञं, धरा धर्म धुरी मता।

धरा धान्यप्रदा लोके धरा गोविन्दवल्लभा ॥१॥
धराधारे समृद्धा च धरा वै लोकपालिका।
क्षमाभाव-भरा माता तस्मात्तां पूजयाम्यहम् ॥२॥
आधारशक्तये नमः पूजयामि गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

प्राणायाम- प्राणायाम से नाड़ीशोधन, रक्तसंचार, मन की स्थिरता व प्रसन्नता प्राप्त होती है, शरीर हल्का लगता है, आयुवृद्धि होती है। कम से कम तीन प्राणायाम अवश्य करें।

विधि- पूरा सांस नाक से धीरे-धीरे खीचें। (मुख पूरी तरह से बन्द रहे) इसे पूरक कहते हैं।

फिर यथाशक्ति परेशान हुए बिना सांस को रोके रहें। सारी नाड़ियों तक सांस जा सके। इसे कुंभक कहते हैं।

फिर धीरे-धीरे सांस को पूरा अन्त तक छोड़ें। इसे रेचक कहते हैं। यह एक प्राणायाम हुआ । इस प्रकार तीन बार प्राणायाम करें।

पूरक- सांस खींचकर भरना। (नाडी तक में सांस भर लें)

कुम्भक- सांस को यथा शक्ति रोके रखना।

रेचक- सांस को धीरे-धीरे बिना आवाज बाहर निकालना। (नाड़ी तंत्र से पूरा सांस निकालना)

5 सेकंड में पूरक, 20 सेकंड में कुम्भक, 5 सेकंड में रेचक।

हाथ जोड़ सभी देवों को प्रणाम करें।

श्री मन्महा-गणाधिपतये नमः।
श्री लक्ष्मी-नारायणाभ्यां नमः।
श्री उमा-महेश्वराभ्यां नमः।

श्री इष्ट-देवताभ्यो नमः।

श्री कुल-देवताभ्यो नमः।

श्री ग्राम-देवताभ्यो नमः।

श्री स्थान-देवताभ्यो नमः।

श्री वास्तु-देवताभ्यो नमः।

श्री मातृ-पितृ-चरण-कमलेभ्यो नमः।

श्री गुरु-चरण-कमलेभ्यो नमः।

अपने माताजी, पिताजी, गुरुजी का स्मरण करके उनको नमन करें। (समीप हों तो प्रत्यक्ष प्रणाम करें।)

मंगलश्लोकपाठ- हाथ में पुष्प लेकर मंगलश्लोकों का पाठ करें।

अविघ्नमस्तु

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यःपठेच्छृणुयादपि॥
पुण्यश्लोको नलो राजा पुण्यश्लोको युधिष्ठिरः।
पुण्यश्लोका च वैदेही पुण्यश्लोको जनार्दनः॥
अश्वथामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः॥
अहल्या द्रौपदी सीता तारा मन्दोदरी तथा।

पंचकं ना स्मरेन्नित्यं महापातकनाशनम्॥
उमा उषा च वैदेही रमा गंगेति पंचकम्।
प्रातरेव पठेन्नित्यं सौभाग्यं वर्धते सदा॥
सोमनाथो वैजनाथो धन्वन्तरिरथाश्विनौ।
पंचैतान्यः स्मरेन्नित्यं व्याधिस्तस्य न बाधते॥
कपिलः कालियोऽनन्तो वासुकिस्तक्षकस्तथा।
पंचैतान्स्मरतो नित्यं विषबाधा न बाधते॥
हरं हरिं हरिश्चन्द्रं हनूमन्तं हलायुधम्।
पंचकं वै स्मरेन्नित्यं घोरसंकटनाशनम्॥
रामं स्कन्दं हनूमन्तं वैनतेयं वृकोदरम्।
पंचैतान्संस्मरेन्नित्य भवबाधा विनिश्यति॥
सनत्कुमारदेवर्षिशुक-भीष्मप्लवंगमाः।
पंचैतान् स्मरतो नित्यं कामस्तस्य न बाधते॥
कर्कोटकस्य नागस्य दमयन्त्या नलस्य च।
ऋतुपर्णस्य राजर्षेः कीर्तनं कलिनाशनम्॥
कार्तवीर्यार्जुनो नाम राजा बाहुसहस्रवान्।
तस्य स्मरणमात्रेण गतं नष्टं च लभ्यते॥
प्रह्लादनारदपराशरपुण्डरीकव्यासाम्बरीषशुकशौनकभीष्मदाल्भ्यान्।
रुक्मांगदार्जुनवसिष्ठविभीषणादीन्पुण्यानिमान्यरमभागवतान् स्मरामि॥
धर्मो विवर्धति युधिष्ठिरकीर्तनेन पापं प्रणश्यति वृकोदरकीर्तनेन।
शत्रुर्विनश्यति धनन्जयकीर्तनेन माद्रीसुतौ कथयतां न भवन्ति रोगाः।
काश्यां वै भैरवो देवः संसारभयनाशनः।
अनेकजन्मजं पापं स्मरणेन विनश्यति॥
विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्।

वन्दे काशीं गुहां गंगां भवानीं मणिकर्णिकाम्
करपात्रं कृपामूर्तिं कृष्णबोधं निरंजनम्।
माधवं प्रबलं विष्णुं शंकरं नौमि भूतये॥
सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुःखभाग्भवेत्॥
मंगलं देवदेवेशो मंगलं वृषभध्वजः।
मंगलं पार्वतीनाथो मंगलं त्रिपुरान्तकः॥

हृदय को अच्छी भावना से परिपूर्ण करके शुभ संकल्प करें।
संकल्प- अर्घ्यपात्र अथवा हाथ में कुश, फल, पुष्प (पुष्प के अभाव में रंगीन चावल) अक्षत, जल, यथाभाव दक्षिणा अथवा केवल जल लेकर संकल्प करें।

श्रीविष्णुः श्रीविष्णुः श्रीविष्णुः तत् सत् अद्य श्रीमन्नारायणस्य निर्देशेन प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणो द्वितीय-परार्धे रथन्तरादि-द्वात्रिंशत् कल्पानां मध्ये वर्तमाने अष्टमे श्री श्वेतवाराह-कल्पे स्वायम्भुवादि-चतुर्दश-मन्वन्तराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वत-मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि-प्रथमचरणे जम्बुद्वीपे भरतखण्डे भगवदवतार-परिपूते भारतवर्षे (जिस राज्य में हो उस राज्य का नाम) . ..... **राज्ये** (जिस जनपद में हो उसका नाम) ..... **जनपदे** (जिस नगर में हो उस नगर का नाम) ..... **नगरे** (पौराणिक क्षेत्र या पवित्र नदी समीप हो तो उसका भी स्मरण करना चाहिए) **श्री बौद्धावतारे प्रभवादि षष्टि-संवत्सराणां मध्ये ..... संवत्सरे ..... अयने ..... ऋतौ ..... मासे ..... पक्षे ..... तिथौ ..... दिवसे ..... नक्षत्रे ..... योगे ..... करणे ..... राशि स्थिते सूर्ये ..... राशि स्थिते चन्द्रे ..... राशि स्थिते**

गुरौ (अपना गोत्र बोलें) ..... **गोत्र** (अपना नाम बोलें) ..... **नाम** (अपनी कोई मनोकामना हो तो उसे स्मरण कर लें।) ..... **मनोकामना सिद्ध्यर्थं (निष्काम-भावनया अथवा नित्य-कर्मत्वेन) श्रीसाम्बसदाशिवप्रीत्यर्थं पार्थिवलिंगपूजनम् अहं करिष्ये।**

संकल्प बोलकर अर्घ्यपात्र अथवा हाथ में रखें जल को भगवान के श्रीचरणों में अर्पित कर दें।

कर्मपात्र पूजनम्- एक जल पूरित लोटे में गन्धाक्षत-पुष्प डाल के उसे हाथ से ढक लें और सभी नदी आदि तीर्थों का उसमें आवाहन करते हुए श्लोक को पढ़े।

जले देवाः जले प्राणाः जले सर्वं प्रतिष्ठितम्।
जलाधारं महाकुम्भं तस्मात्तं पूजयाम्यहम्॥

फिर उस जल को अपने ऊपर और पूजन सामग्री पे छिड़कें।

दीप पूजनम्- गन्धाक्षत-पुष्प लेकर दीपक का पूजन करें।

पूजयामि प्रदीपस्थं दैवतं परमं शुभम्।
विघ्नध्वान्तहरं दिव्यं तैजसं कर्मसाक्षिणम्॥

दीपस्थ देवतायै नमः पूजयामि गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि।

पुष्प को दीपक के पास रख दें और हाथ धो लें।

भैरव नमस्कार- गन्धाक्षत-पुष्प लेकर भैरव जी का ध्यान करें।

भाग्यभूतिकरं देवं सर्वसन्तोषकारकम्।
नमामि काशिकानाथं भैरवं भयहारकम्॥

वं बटुक-भैरवाय नमः पूजयामि पुष्पं समर्पयामि।

हनुमत् पूजनम्- गन्धाक्षत-पुष्प लेकर हनुमान जी का ध्यान करें।

रामसेवाव्रताराधने तत्परं
सागरोल्लंघनं यस्य लीलाश्रितम्।
भक्तिभावान्वितं भावुकं शंकरं
अंजनानन्दनं रामदूतं भजे॥

हं हनुमते नमः पूजयामि गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि।

घण्टा पूजनम्- गन्धाक्षत-पुष्प लेकर गरुड़ भगवान (घण्टी) का स्मरण करें।

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं च रक्षसाम्।
घण्टानादं विकुर्वीत पश्चात् घण्टां प्रपूजयेत्॥१॥
शुभध्वनियुतं दिव्यं राक्षसादिनिवारकम्।
मांगलिकं समेषां वै नौमि घण्टस्थदैवतम्॥२॥
सदैव देववर्धिकां सुशान्तिसौख्यसर्जिकां
सुरार्चनाप्रसूचिकां पलायनाय रक्षसाम्।
शिवात्मिकां शुभात्मिकां सदात्मिकां चिदात्मिकां
सुघण्टिकास्थदेवतां सदा नमामि सादरम्॥३॥

घण्टस्थ-गरुड-देवतायै नमः पूजयामि गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि।
घण्टी को बजा दें।

शंखपूजनम्- गन्धाक्षत-पुष्प लेकर शंख का ध्यान करें।

सागरात्तु समुत्पन्नं रमायाः भ्रातरं वरम्।
दारिद्र्य दुःखहर्तारं वन्दे शंखस्थदैवतम्॥१॥
निनादजन्यसम्पदा-प्रदायकं निरन्तरं
दरिद्रताविदारकं च दैन्यदुःखदारकम्।
समुद्रवारिराशिकेलिकौशलेन संयुतं
रमानुजं शशिप्रभं सुशंखदैवतं भजे॥२॥

शंखस्थ देवतायै नमः पूजयामि गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि।

गुरु स्मरण- गुरुजी का स्मरण करके उनको नमन करें । (समीप हों तो प्रत्यक्ष प्रणाम करें)

यदवबोध-परायण-सन्नुतं भ्रमविकार-हरैक-गतिं परम्।
भवभयाप-हरं परमार्थदं गुरुवरांघ्रि-सरोज-रजो नुमः॥

(द्रुतविलम्बित)

शिव लिंग वनाने की विधि-(किस प्रकार शिव लिंग का निर्माण करे।)

पार्थिवेश्वर निर्माण विधि

मिट्टीका ग्रहण- **उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना।**
मृत्तिके त्वां गृह्णामि प्रजया च धनेन च॥

'ह्रीं हराय नमः' - यह मन्त्र पढ़कर मिट्टी ले। मिट्टी अच्छी तरह देखकर कंकड़ आदि निकाल दे। कम से कम **१२** ग्राम मिट्टी हो। जल मिलाकर मिट्टीको गूँथ ले।

लिंग गठन- 'ह्रीं महेश्वराय नमः' कहकर लिंगका गठन करे। यह अँगूठेसे न छोटा हो और न बित्तेसे बड़ा। मिट्टीकी नन्हींसी गोली बनाकर लिंगके ऊपर रखे। यह 'वज्र' कहलाता है। काँसा आदिके पात्रमें बिल्वपत्र रखकर उसपर निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर लिंगकी स्थापना करे।

पार्थिवेश्वर स्थापना चित्र

पार्थिवेश्वर प्राणप्रतिष्ठा विधि -

बाएं हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से ढ़के और यह मंत्र बोल कर शिवलिंग पर चढावें।

ह्रीं शूलपाणये नमः, हे शिव इह प्रतिष्ठितो भव।

प्राणप्रतिष्ठा मन्त्रका विनियोग- प्रतिष्ठासे पूर्व जल ग्रहणकर निम्नरूपसे विनियोग करे-

विनियोग- ह्रीं अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः, ऋग्यजुःसामानिच्छन्दांसि, क्रियामयवपुः प्राणाख्या देवता आँ बींज ह्रीं शक्तिः क्रौं कीलकं देव (देवी) प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः

इतना कहकर जल भूमिपर छोड़ दे।

प्राणप्रतिष्ठा- हाथमें पुष्प लेकर उसे मुर्तिपर स्पर्श करते हुए नीचे लिखे मन्त्र को बोले-

ह्रीं ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः, शिरसि। ह्रीं ऋग्यजुःसामच्छन्दोभ्यो नमः, मुखे। ह्रीं प्राणाख्यादेवतायै नमः, हृदि। ह्रीं आँ बीजाय नमः,गुह्ये। ह्रीं ह्रीं शक्त्यै नमः,पादयोः। ह्रीं क्रौं कीलकाय नमः,सर्वाङ्गेषु।

इस प्रकार न्यास करके पुनः पार्थिव लिङ्गका स्पर्श करे-

ह्रीं आँ ह्रीं क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ सः सोऽहं शिवस्य प्राणा इह प्राणाः।
ह्रीं आँ ह्रीं क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ सः सोऽहं शिवस्य जीव इह स्थितः।
ह्रीं आँ ह्रीं क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ सः सोऽहं शिवस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षुः श्रोत्रघ्राणजिह्वापाणिपादपायूपस्थानि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

आवाहनम्- अपने हृदय में स्थित भगवान की भावना करके पुष्प-अक्षत द्वारा मूर्ति में आवाहित करें।

ज्ञानविज्ञान-दातारं सर्वसम्पत् विधायकम्।
आवाहयामि विश्वेशं शिवं साम्बमहेश्वरम्॥
स्वामिन्! सर्वजगन्नाथ! यावत्पूजावसानकम्।
तावत्त्वम्प्रीतिभावेन लिंगेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ह्रीं भूः पुरुषं साम्बसदाशिवमावाहयामि। बोलकर पुष्प-अक्षत चढावें।
ह्रीं भुवः पुरुषं साम्बसदाशिवमावाहयामि। बोलकर पुष्प-अक्षत चढावें।
ह्रीं स्वः पुरुषं साम्बसदाशिवमावाहयामि। बोलकर पुष्प-अक्षत चढावें।

विपियोग- ह्रीं अस्य श्रीशिवप ञ्चाक्षरमन्त्रस्य वामदेव ऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्रीसदाशिवो देवता, ओङ्कारो बीजम्, नमः शक्तिः, शिवाय इति कीलकम्, मम साम्बसदाशिवप्रीत्यर्थं न्यासे पार्थिवलिङ्गपूजने विनियोगः।

- इस विनियोगसे अपने और देवताको दूर्वा अथवा कुशसे स्पर्श करते हुए तत्तद् अंगोंमें न्यास करे।

ऋष्यादिन्यास- ह्रीं वामदेवर्षये नमः, शिरसि।
ह्रीं अनुष्टुप्छन्दसे नमः,मुखे।
ह्रीं श्रीसदाशिवदेवतायै नमः, हृदि।
ह्रीं बीजाय नमः, गुह्ये।
ह्रीं शक्तये नमः,पादयोः।
ह्रीं शिवाय कीलकाय नमः,सर्वाङ्गे।
ह्रीं नं तत्पुरुषाय नमः, हृदये।
ह्रीं मं अघोराय नमः, पादयोः।
ह्रीं शिं सद्योजाताय नमः, गुह्ये।

ह्रीं वां वामदेवाय नमः, मूर्ध्नि ।
ह्रीं यं ईशानाय नमः, मुखे।

करन्यायस- **ह्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।**
ह्रीं नं तर्जनीभ्यां नमः।
ह्रीं मं मध्यमाभ्यां नमः।
शिं अनामिकाभ्यां नमः।
वां कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
यं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्गन्यास- **ह्रीं हृदयाय नमः।**
ह्रीं नं शिरसे स्वाहा।
ह्रीं मं शिखायै वषट्।
ह्रीं शिं कवचाय हुम्।
ह्रीं वसं नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रीं यं अस्त्राय फट्।

इस प्रकार न्यास करनेके पश्चात् भगवान् साम्बसदाशिवका ध्यानपूर्वक पूजन करे।

गणेश पूजनम्- हाथ में गन्धाक्षत-पुष्प लेकर भगवान गणेशजी का ध्यान करें।

वयं दुःख-दीनाः दयाधारहीनाः
भवाब्धौ निमग्नाः दुराचारलीनाः।
सदा शाश्वतं देवदेवं प्रजेशं
गुरुं दुःखहत्यै गणेशं नमामः॥
गं गणपतये नमः ध्यानार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि।

गौरी पूजनम्- गन्धाक्षत-पुष्प लेकर माँ भगवती गौरी का ध्यान करें।

सकलभुवनमध्ये वन्दनीया परा या
सुरवरमुनिपूज्या कल्पवल्ली विधात्री।
सुजनसुमनशोभासर्वसौभाग्यमूला
दनुजकुलनिहन्त्रीशाम्भवी नः पुनातु॥
गौर्यै नमः ध्यानार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि।

नन्दीश्वर पूजनम्- गन्धाक्षत-पुष्प लेकर नन्दीश्वर जी का ध्यान करें।

धर्मरूपं दयासिंधुं भक्तसंकल्पपूरकम्।
वन्दे नन्दीश्वरं देवं शंकरांघ्रिसमर्चकम्॥
नन्दीश्वराय नमः ध्यानार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि।

वीरभद्र पूजनम्- गन्धाक्षत-पुष्प लेकर वीरभद्र जी का ध्यान करें।

शिवाज्ञापालकं दिव्यं दक्षाध्वरहरं हरम्।
महाबलं गणाधीशं वीरभद्रं नमाम्यहम्॥

वीरभद्राय नमः ध्यानार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि।

स्वामी कार्तिक पूजनम्- गन्धाक्षत-पुष्प लेकर कार्तिकजी का ध्यान करें।

देवसेनापति-स्कन्दं उमाशंकर-बालकम्।
कृत्तिकापालितं देवं कार्तिकेयं नतोऽस्म्यहम्॥

कार्तिकेश्वराय नमः ध्यानार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि।

कुबेर पूजनम्- गन्धाक्षत-पुष्प लेकर कुबेरजी का ध्यान करें।

यक्षेशेशं धनाध्यक्षं उत्तराशाधिपं प्रभुम्।
शिवपादाब्जभृंगं तं नमामि धर्मरक्षकम्॥

कुबेराय नमः ध्यानार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि।

कीर्तिमुख पूजनम्- गन्धाक्षत-पुष्प लेकर कीर्तिमुखजी का ध्यान करें।

द्वारपालं महावीरं सुरासुरैः सुपूजितम्।
शिवाज्ञापालकं धीरं कीर्तिमुखं नमाम्यहम्॥

कीर्तिमुखाय नमः ध्यानार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि।

नागराज पूजनम्- गन्धाक्षत-पुष्प लेकर नागराज का ध्यान करें।

धराधारं महाधीरं धर्मवर्मविधारकम्।
शिवालंकाररूपं तं सर्पराजं नमाम्यहम्॥

नागराजाय नमः ध्यानार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि।

शिवध्यानम्- गन्धाक्षत-पुष्प बिल्वपत्र लेकर शिवजी का ध्यान करें।

शिवाकरांघ्रिपूजितं जटाकटाहशोभितं।
सुरासुरैः विनंदितं महर्षिहर्षहर्षितम्॥
अभीष्टसिद्धिदायकं प्रसन्नताविधायकं।
समष्टिशक्तिसाधकं नमामि शंकरं प्रभुम्॥

सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय सवाहनाय सपरिकराय अंगावरणदेवता-सहिताय सर्वदेवमयाय सर्वाभीष्टफलप्रदाय भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः ध्यानार्थे गन्धाक्षत-पुष्प-बिल्वपत्राणि समर्पयामि।

आसन- आसन के लिए हाथ में पुष्प अक्षत बिल्वपत्र लेकर भगवान को निवेदित करें। (अपने मन में भाव करें कि भगवान जी को बैठने के लिए हमने मखमल का आसन बिछाया है।)

पुष्पाक्षतमयं दिव्यं बिल्वपत्रमयं तथा।
महादेव! दयासिंधो! आसनं प्रतिगृह्यताम्॥

चिन्तामणि- पार्थिवेश्वराय नमो नमः आसनार्थे अक्षत- पुष्प-बिल्वपत्राणि समर्पयामि।

पाद्यम्- एक बार भगवान पर जल चढ़ाये। (अपने मन में भाव करें कि हम भगवान के कोमल चरणों को प्रक्षालित कर रहे हैं)

श्रीगंगादिसरिज्जन्यं पावनं सर्वतुष्टिदम्।
पादप्रक्षालनार्थाय पाद्यं स्वीकुरु शंकर॥

चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः पादयोः पाद्यं जलं समर्पयामि।

अर्घ्यम्- भगवान के करकमलों को धोने लिए जल चढ़ायें।

कर्पूरगंधसंयुक्तं पुष्पाक्षत-फलान्वितम्।
अर्घ्योदकमुरीकृत्य प्रसन्नो भव शंकर॥

चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः हस्तयोः अर्घ्यं जलं समर्पयामि।

आचमनीयं जलम्- एक बार आचमन करने के लिए जल चढ़ायें।

एलादिचूर्णसंशुद्धं शीतलं मधुरं पयः।
आचमनं कुरुस्व त्वं प्रसन्नोऽस्तु महेश्वर!॥

चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः आचमनीयं जलं समर्पयामि।

मधुपर्कम्- मधुपर्क (दही, घी, शहद का मिश्रण) भगवान को निवेदित करें।

मधु–दधि-घृताक्तं च सुमधुरं धरामृतम्।
अर्पयामि महादेव! मधुपर्कं प्रगृह्यताम्॥

सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय सवाहनाय सपरिकराय अंगावरणदेवता-सहिताय सर्वदेवमयाय सर्वाभीष्टफलप्रदाय भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः मधुपर्कं समर्पयामि। (पुनः आचमनीय जल चढ़ायें।)

ह्रीं नमः शिवाय आचमनीयं जलं समर्पयामि।

सर्वांगस्नानम्- भक्ति भाव से पूरित होकर भगवान को स्नान करायें।

तीर्थोदकेन दिव्येन सुरभितेन वारिणा।
स्नापयामि हि विश्वेश सुप्रीतो वरदो भव॥

सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय सवाहनाय सपरिकराय अंगावरणदेवता सहिताय सर्वदेवमयाय सर्वाभीष्ट-फलप्रदाय भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः सर्वांगे स्नानीयं जलं समर्पयामि।

दुग्धस्नानम्-

मधुरं पुष्टिदं दिव्यं चंद्रश्वेतं सुधोपमम्।
भारतीयगवां दुग्धं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः गोदुग्ध-स्नानं समर्पयामि।

शुद्धजल स्नान- **ह्रीं नमः शिवाय सर्वाभीष्ट-फलप्रदाय सपरिकराय भगवते साम्बसदाशिवाय पार्थिवेश्वराय नमो नमः दुग्धस्नानान्ते स्नानीयं शुद्धोदकं समर्पयामि।**

आचमनीय जल- **ह्रीं नमः शिवाय आचमनीयं जलं समर्पयामि।**

दधिस्नानम्-

शारदेन्दु समाभासं मधुराम्लं सुरप्रियम्।
दध्यामृतं गृहाण त्वं स्नानार्थं भुवनेश्वर!॥

भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः भारतीय-वेदलक्षणायाः कामधेनु-वंशजायाः गोमातुः दुग्धनिर्मितेन दध्ना भावपूर्वकं स्नापयामि।

शुद्धजल स्नान- **ह्रीं नमः शिवाय सर्वाभीष्ट-फलप्रदाय सपरिकराय भगवते साम्बसदाशिवाय पार्थिवेश्वराय नमो नमः दधिस्नानान्ते स्नानीयं शुद्धोदकं समर्पयामि।**

आचमनीय जल- **ह्रीं नमः शिवाय आचमनीयं जलं समर्पयामि।**

घृतस्नानम्-

गोनवनीत-संजातं शक्तिदं शान्तिकान्तिदम्।
हविरूपं घृतं तुभ्यं स्नानार्थम्-अर्पयाम्यहम्॥

भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः भारतीय-वेदलक्षणायाः कामधेनु-वंशजायाः गोमातुः नवनीत-निर्मितेन घृतेन भावपूर्वकं स्नापयामि।

शुद्धजल स्नान- **ह्रीं नमः शिवाय सर्वाभीष्ट-फलप्रदाय सपरिकराय भगवते साम्बसदाशिवाय पार्थिवेश्वराय नमो नमः घृतस्नानान्ते स्नानीयं शुद्धोदकं समर्पयामि।**

आचमनीय जल- **ह्रीं नमः शिवाय आचमनीयं जलं समर्पयामि।**

मधुस्नानम्-

पुष्प-किंजल्क-संभूतं वासंतिकमनामयम्।
पवित्रं मधु देवेश स्वीकृत्य वरदो भव॥

भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः मधुस्नानं समर्पयामि।

शुद्धजल स्नान- **ह्रीं नमः शिवाय सर्वाभीष्ट-फलप्रदाय सपरिकराय भगवते साम्बसदाशिवाय पार्थिवेश्वराय नमो नमः मधुस्नानान्ते स्नानीयं शुद्धोदकं समर्पयामि।**

आचमनीय जल- **ह्रीं नमः शिवाय आचमनीयं जलं समर्पयामि।**

शर्करास्नानम्-

इक्षुसार-समुत्पन्नं शर्करां मधुरां शुभाम्।
मालिन्य-शोधनायैव स्नानार्थं स्वीकुरु प्रभो!॥

भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः शर्करास्नानं समर्पयामि।

शुद्धजल स्नान- **ह्रीं नमः शिवाय सर्वाभीष्ट-फलप्रदाय सपरिकराय भगवते साम्बसदाशिवाय पार्थिवेश्वराय नमो नमः शर्करास्नानान्ते स्नानीयं शुद्धोदकं समर्पयामि।**

आचमनीय जल- **ह्रीं नमः शिवाय आचमनीयं जलं समर्पयामि।**

पंचामृतस्नानम्-

दुग्धं दधि घृतं क्षौद्रं शर्करादि समन्वितम्।
पंचामृतं प्रयच्छामि प्रसीद शैलजाधव!॥

भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः पंचामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धजल स्नान- **ह्रीं नमः शिवाय सर्वाभीष्ट-फलप्रदाय सपरिकराय भगवते साम्बसदाशिवाय पार्थिवेश्वराय नमो नमः पंचामृतस्नानान्ते स्नानीयं शुद्धोदकं समर्पयामि।**

आचमनीय जल- **ह्रीं नमः शिवाय आचमनीयं जलं समर्पयामि।**

इक्षुरस स्नानम्-

दारिद्र्य-ध्वंसकृच्छुभ्रं पौष्टिकं भूतिवर्धकम्।
इक्षुसार-समुद्भूतं रसं स्वीकुरु शंकर!॥

भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः इक्षुरसस्नानं समर्पयामि।

शुद्धजल स्नान- **ह्रीं नमः शिवाय सर्वाभीष्ट-फलप्रदाय सपरिकराय भगवते साम्बसदाशिवाय पार्थिवेश्वराय नमो नमः इक्षुरसस्नानान्ते स्नानीयं शुद्धोदकं समर्पयामि।**

आचमनीय जल- **ह्रीं नमः शिवाय आचमनीयं जलं समर्पयामि।**

पुष्पोदक स्नानम् (गुलाब जल से)

दिव्यं पुष्पपरागाक्तं सौरभ्यमुपदायकम्।*
स्नानीयं हि महादेव! पुष्पोदकं समर्पये॥

भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः पुष्पोदकस्नानं समर्पयामि।

शुद्धजल स्नान- **ह्रीं नमः शिवाय सर्वाभीष्ट-फलप्रदाय सपरिकराय भगवते साम्बसदाशिवाय पार्थिवेश्वराय नमो नमः पुष्पोदकस्नानान्ते स्नानीयं शुद्धोदकं समर्पयामि।**

आचमनीय जल- **ह्रीं नमः शिवाय आचमनीयं जलं समर्पयामि।**

फलोदक स्नानम् (फल के रस से)

सुपक्व-फल-संसिद्धं पावनं पुष्टिकारकम्।
शिवप्रीतिकरं नित्यम् अर्पयामि फलोदकम्॥

भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः फलोदकस्नानं समर्पयामि।

शुद्धजल स्नान- **ह्रीं नमः शिवाय सर्वाभीष्ट-फलप्रदाय सपरिकराय भगवते साम्बसदाशिवाय पार्थिवेश्वराय नमो नमः फलोदकस्नानान्ते स्नानीयं शुद्धोदकं समर्पयामि।**

आचमनीय जल- **ह्रीं नमः शिवाय आचमनीयं जलं समर्पयामि।**

गंधोदक स्नानम् (चन्दन के जल से)

दुर्वासनाहरं स्वच्छं विशुद्धगंधसंयुतम्।
स्वीकुरु देवदेवेश! गंधोदकं सुनिर्मलम्॥

भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः फलोदकस्नानं समर्पयामि।

शुद्धजल स्नान- **ह्रीं नमः शिवाय सर्वाभीष्ट-फलप्रदाय सपरिकराय भगवते साम्बसदाशिवाय पार्थिवेश्वराय नमो नमः गंधोदकस्नानान्ते स्नानीयं शुद्धोदकं समर्पयामि।**

आचमनीय जल- **ह्रीं नमः शिवाय आचमनीयं जलं समर्पयामि।**

विजियोदक स्नानम् (भांग से)

विशिष्टशिष्टशासनप्रथाप्रवाहपालितुं
समौषधिस्वरूपदिव्यभावभक्तिसिंचितम्।
अनंगसंगरंगरागभंजनाय पावनं
समर्पयामि भंगवारि विश्वनाथतुष्टये।।

भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः विजियोदकस्नानं समर्पयामि।

शुद्धजल स्नान- **ह्रीं नमः शिवाय सर्वाभीष्ट-फलप्रदाय सपरिकराय भगवते साम्बसदाशिवाय पार्थिवेश्वराय नमो नमः विजियोदकस्नानान्ते स्नानीयं शुद्धोदकं समर्पयामि।**

आचमनीय जल- **ह्रीं नमः शिवाय आचमनीयं जलं समर्पयामि।**

नारिकेल जलस्नानम्-

श्रीफलजन्यमुत्कृष्टं पवित्रं पापनाशकम्।
गर्भवासनिराशाय विगर्भोदकमर्पये।।

भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः नारिकेलगर्भोदक-स्नानं समर्पयामि।

शुद्धजल स्नान- **ह्रीं नमः शिवाय सर्वाभीष्ट-फलप्रदाय सपरिकराय भगवते साम्बसदाशिवाय पार्थिवेश्वराय नमो नमः नारिकेलगर्भोदक-स्नानान्ते स्नानीयं शुद्धोदकं समर्पयामि।**

आचमनीय जल- **ह्रीं नमः शिवाय आचमनीयं जलं समर्पयामि।**

इत्रोदक स्नानम्-

पुष्पसारसमुद्भूतं द्रव्यं सुपावनं शुभम्।
संस्नापयामि तेनाहं प्रसीद शिवशंकर!।।

भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः इत्रोदकस्नानं समर्पयामि।

आचमनीय जल- **ह्रीं नमः शिवाय आचमनीयं जलं समर्पयामि।**

तीर्थोदक स्नानम्

पापेभ्यः त्राणकृच्छुद्धं पुण्यपाथेय-दायकम्।
पावनं पावनेभ्योऽपि तीर्थनीरं समर्पये॥

भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः तीर्थोदकस्नानं समर्पयामि।

आचमनीय जल- **ह्रीं नमः शिवाय आचमनीयं जलं समर्पयामि।**

(मनोकामना पूर्ति के लिए रुद्राभिषेक में प्रयुक्त होने वाले प्रशस्त द्रव्य)

अपने कल्याण के लिये भगवान् सदाशिव की प्रसन्नता के निमित्त निष्काम भाव से यजन करना चाहिये, इसका अनन्त फल है। शास्त्रों में विविध कामनाओं की पूर्ति के लिए रुद्राभिषेक के निमित्त अनेक द्रव्यों का निर्देश हुआ है जिसे यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है- वृष्टि हेतु जल से, व्याधि-शान्ति हेतु कुशोदक से, पशु-सम्पदा-वृद्धि हेतु दहि से, लक्ष्मी-प्राप्ति के लिये इक्षुरस (गन्ने का रस), मोक्ष-प्राप्ति हेतु तीर्थ के जल से तथा पुत्र प्राप्ति हेतु दुध से अभिषेक करना चाहिए ।

करन्यासः-

ह्रीं नमः शिवाय हृदयाय नमः

ह्रीं नमः शिवाय शिरसे स्वाहा

ह्रीं नमः शिवाय शिखायै वषट्

ह्रीं नमः शिवाय कवचाय हुम्

ह्रीं नमः शिवाय नेत्रत्रयाय वौषट्

ह्रीं नमः शिवाय अस्त्राय फट्

शिवध्यानम्- (गन्धाक्षत-पुष्प बिल्वपत्र लेकर शिवजी का ध्यान करें।)

अकलसकलकेल्यालंकृतं लोककान्तं
अविचलतनयादृक्भाप्रसन्नं प्रशान्तम्॥
अमलमलयगंधैर्लोकमालिन्यकालं
नमति शिवमजेशं भावुको भक्तिनम्रः॥१॥

मदनकदनकर्ता लोकविश्रान्तिदाता।
प्रमथगणविभक्त्या पूजितो भाविरक्तः॥
विभवविनयविद्याशक्तिसिद्धिप्रदाता।
सुरनरमुनिपूज्यः शंकरः शं करोतु॥२॥

भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः ध्यानार्थे गन्धाक्षत-बिल्वपत्र-पुष्पाणि समर्पयामि।

(**महाभिषेक**- गंगाजल, दुग्धधारा अथवा अन्य किसी प्रशस्त द्रव्य से भगवान का शिवमहिम्नः स्तोत्र से अभिषेक करें।)

॥ श्रीशिवमहिम्नः स्तोत्रम् ॥

महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृशी
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः ।
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्
ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः ॥१॥

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयो-
रतद्व्यावृत्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि ।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
पदे त्ववर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः ॥२॥

मधुस्फीता वाचः परममृतं निर्मितवत-
स्तव ब्रह्मन् किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम् ।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता ॥३॥

तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्
त्रयीवस्तुव्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु ।
अभव्यानामस्मिन् वरद रमणीयामरमणीं
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः ॥४॥

किमीहः किं कायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च ।

अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः
कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः ॥५॥
अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगता-
मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति ।
अनीशो वा कुर्याद् भुवनजनने कः परिकरो
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे ॥६॥
त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च ।
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिल-नानापथजुषां
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ॥७॥
महोक्षः खट्वांगं परशुरजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम् ।
सुरास्तां तामृद्धिं दधति च भवद्भ्रूप्रणिहितां
न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति ॥८॥
ध्रुवं कश्चित् सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं
परो ध्रौव्याऽध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये ।
समस्तेऽप्येतस्मिन् पुरमथन तैर्विस्मित इव
स्तुवन् जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता ॥९॥
तवैश्वर्यं यत्नाद् यदुपरि विरिंचो हरिरधः
परिच्छेतुं यातावनलमनलस्कन्धवपुषः ।
ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश यत्

स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति ॥१०॥

अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं
दशास्यो यद्बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान् ।
शिरःपद्मश्रेणी-रचितचरणाम्भोरुहबलेः
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम् ॥११॥

अमुष्य त्वत्सेवा-समधिगतसारं भुजवनं
बलात् कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः ।
अलभ्यापातालेऽप्यलसचलितांगुष्ठशिरसि
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद् ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः ॥१२॥

यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सती-
मधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयत्रिभुवनः ।
न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयो-
र्न कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः ॥१३॥

अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपा
विधेयस्याऽऽसीद्यस्त्रिनयनविषं संहृतवतः ।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो
विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभंगव्यसनिनः ॥१४॥

असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः ।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत्
स्मरः स्मर्तव्यात्मा नहि वशिषु पथ्यः परिभवः ॥१५॥

महीपादाघाताद् व्रजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यद्-भुजपरिघरुग्ण-ग्रह-गणम् ।
मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृत-जटाताडिततटा
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता ॥१६॥
वियद्व्यापी तारागणगुणित-फेनोद्गमरुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते ।
जगद्द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि-
त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः ॥१७॥
रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो
रथांगे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणिः शर इति ।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बर विधि-
र्विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः ॥१८॥
हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयो-
र्यदेकोने तस्मिन् निजमुदहरन्नेत्रकमलम् ।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम् ॥१९॥
क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते
अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदान-प्रतिभुवं
श्रुतौ श्रद्धां बध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः ॥२०॥
क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृता

मृषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः ।
क्रतुभ्रेषस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः ॥२१॥
प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद्-भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा ।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः ॥२२॥
स्वलावण्याशंसा धृतधनुषमह्नाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि ।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरतदेहार्धघटना
दवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः ॥२३॥
श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचराः
चिता-भस्मालेपः स्रगपि नृकरोटी-परिकरः ।
अमंगल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथापि स्मर्तृणां वरद परमं मंगलमसि ॥२४॥
मनः प्रत्यक् चित्ते सविधमविधायात्त-मरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमद-सलिलोत्संगित-दृशः ।
यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्यामृतमये
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत् किल भवान् ॥२५॥
त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवह-
स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च ।

परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रतु गिरं
न विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि ॥२६॥
त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरा-
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत् तीर्णविकृति ।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः
समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम् ॥२७॥
भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहां-
स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम् ।
अमुष्मिन् प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि
प्रियायास्मै धाम्ने प्रविहित-नमस्योऽस्मि भवते ॥२८॥
नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः ।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति शर्वाय च नमः ॥२९॥
बहुलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः ।
जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः ॥३०॥
कृशपरिणति-चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं
क्व च तव गुण-सीमोल्लंघिनी शश्वदृद्धिः ।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद्

वरद चरणयोस्ते वाक्य-पुष्पोपहारम् ॥३१॥

असित-गिरि-समं स्यात् कज्जलं सिन्धु-पात्रे
सुर-तरुवर-शाखा लेखनी पत्रमुर्वी ।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ॥३२॥

असुर-सुर-मुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दु-मौले-
र्ग्रथित-गुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य ।
सकल-गुण-वरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो
रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार ॥३३॥

अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्
पठति परमभक्त्या शुद्ध-चित्तः पुमान् यः ।
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथात्र
प्रचुरतर-धनायुः पुत्रवान् कीर्तिमांश्च ॥३४॥

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः ।
अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ॥३५॥

दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः ।
महिम्नः स्तवपाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥३६॥

कुसुमदशन-नामा सर्व-गन्धर्व-राजः
शिशुशशिधर-मौलेर्देवदेवस्य दासः ।
स खलु निज-महिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्
स्तवनमिदमकार्षीद् दिव्य-दिव्यं महिम्नः ॥३७॥

सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्ग-मोक्षैक-हेतुं
पठति यदि मनुष्यः प्रांजलिर्नान्यचेताः ।
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम् ॥३८॥
आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुण्यं गन्धर्व-भाषितम् ।
अनौपम्यं मनोहारि शिवमीश्वरवर्णनम् ॥३९॥
इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्कर-पादयोः ।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः ॥४०॥
तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर ।
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः ॥४१॥
एककालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेन्नरः ।
सर्वपाप-विनिर्मुक्तः शिव लोके महीयते ॥४२॥
श्रीपुष्पदन्त-मुख-पंकज-निर्गतेन
स्तोत्रेण किल्बिष-हरेण हर-प्रियेण ।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः ॥४३॥

॥ श्रीशिवमहिम्नः स्तोत्रं सदा शिवार्पणमस्तु ॥

नीचे लिखे वाक्यों को बोलते हुए अभिषेक के जल को अपने ऊपर छिड़कें।

दु:ख हर, दारिद्र्य हर, दौर्मनस्य हर, दौर्भाग्य हर, दौर्बल्य हर, कण्टक हर, अमंगल हर, सर्व सौभाग्य कर, हर हर महादेव।

उत्तरन्यासः-

ह्रीं नमः शिवाय हृदयाय नमः, ह्रीं नमः शिवाय शिरसे स्वाहा

ह्रीं नमः शिवाय शिखायै वषट् , ह्रीं नमः शिवाय कवचाय हुम्

ह्रीं नमः शिवाय नेत्रत्रयाय वौषट् , ह्रीं नमः शिवाय अस्त्राय फट्

शिवध्यानम्-

करुणावरुणालयलीनमतिं भवतापनिवारणशीलगतिम्॥

अभिषेकविधाविधिहीनजनाः प्रणमन्ति सदा शिवमेकगुरुम्॥

शिवशिवशिवशम्भो पाहि संसारपापात्।

हर हर हर देवो दुःखदारिद्र्यदाहात्॥

भव भव मम नाथो विश्वनाथो महोक्षः।

जनिमरणकुचक्राद् रक्ष रक्षाधिपेशः॥

शुद्धोदकस्नानम्- (भगवान को शुद्ध जल से स्नान करायें।)

ह्रीं नमः शिवाय सर्वाभीष्ट-फलप्रदाय सपरिकराय भगवते साम्बसदाशिवाय पार्थिवेश्वराय नमो नमः शुद्धोदकस्नानीयं जलं सर्पयामि।

(संकीर्तन करे)

महादेवं महादेवं महादेवं भजाम्यहम्।

महादेवं महादेवं महादेवं स्मराम्यहम्।।

अंग प्रोक्षणम्- शुद्ध कोमल वस्त्र से भगवान को पोंछें।

पुष्पेण मृदुवस्त्रेण शोषयेत् वारि तत्परः।
यथात्मदेहसेवास्ति देवानांच ततोधिकम्।।

वस्त्रम्-

आच्छादकं शरीरस्य लज्जायाश्च विरक्षकम्।
कार्पासनिर्मितं शुद्धं वस्त्रं तद्धि समर्पये।।

भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः वस्त्रं समर्पयामि।

आचमनीय जल- **ह्रीं नमः शिवाय आचमनीयं जलं समर्पयामि।**

यज्ञोपवीतम्-

द्विजत्व-साधकं शुद्धं दिव्यं यज्ञप्रवर्तकम्।
ब्रह्मसूत्रं सुरैर्युक्तं यज्ञोपवीतमर्पये।।

भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

आचमनीय जल- **ह्रीं नमः शिवाय आचमनीयं जलं समर्पयामि।**

उपवस्त्रम्-

उत्तरीयं महद्दिव्यं शास्त्राचार-प्रवाहकम्।
श्रद्धासिक्तान्तरोहं वै उपवस्त्रं समर्पये।।

भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः उपवस्त्रं समर्पयामि।

आचमनीय जल- **ह्रीं नमः शिवाय आचमनीयं जलं समर्पयामि।**

भस्म-

सर्वाघमर्दकं दिव्यं विभूत्याभा-विधायकम्।
सुगंधिद्रव्य-संयुक्तं भस्म समर्पयामि भो॥

भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः भस्म विलेपयामि।

चन्दनम्-

सर्वतापहरं दिव्यं सर्वथाघहरं परम्।
सर्वसौगन्ध्य संयुक्तं चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः चन्दनं विलेपयामि।

अक्षतम्-

देवप्रियान् शुभान् शुभ्रान् कुंकुमाक्तानखंडितान्।
श्रद्धान्वितानिमान् पुण्यान् अक्षतानर्पयामि भो॥

भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः अलंकरणार्थान अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पम्-

सुगन्धीनि विभिन्नानि देवानन्दकराणि च।

पूजार्थानि सुदिव्यानि पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम्॥

भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः पूजार्थानि पुष्पाणि
समर्पयामि।

पुष्पमालाम्-

दिव्यशोभाभरां भव्यां सम्पदावृद्धिकारिकाम्।
दर्पदोष-निराशाय पुष्पमालां समर्पये ॥

भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः पुष्पमालां समर्पयामि।

बिल्वपत्रम्-

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुतम्।
त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्॥१॥
दर्शनं बिल्वपत्रस्य स्पर्शनं पापनाशनम्।
अघोरपापसंकाशं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्॥२॥
त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च ह्यच्छिद्रैः कोमलैः शुभैः।
तव पूजां करिष्यामि गृहाण परमेश्वर!॥३॥
श्रीवृक्षामृत-सम्भूतं शंकरस्य सदाप्रियम्।
पवित्रं ते प्रयच्छामि बिल्वपत्रं सुरेश्वर!॥४॥
बिल्वमूले महादेवी स्तम्भे देवो महेश्वरः।
भवानीभवभूतं वै पत्रं स्वीकुरु शंकर!॥५॥
श्रीप्रदं सर्वदं सिद्धं सर्वसौभाग्यकारकम्।
पापतापविनाशाय बिल्वपत्रं शिवार्पणम्॥६॥

दोषत्रय-विघाताय रागद्वेषनिवर्तकम्।
सर्वमंगलमूलं वै बिल्वपत्रं शिवार्पणम्॥७॥
स्वर्णराशि-समायुक्तं निर्जराणामतिप्रियम्।
सर्वकाम- समृद्ध्यर्थं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्॥८॥
समत्वा पादकं सूत्रं शिवप्रीति-प्रदायकम्।
प्राकृतं प्रकृतेः मूलं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्॥९॥

भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः अखण्डबिल्वपत्राणि समर्पयामि।

दूर्वाम्- (दूर्वति हिनस्ति रोगान् अनिष्टान् कल्मषानि इति दूर्वा)

दुर्वासना-निहन्तारं पीयूषासव-दायकम्।
त्रिकाण्डं मंगलाकारं दूर्वांकुरं समर्पये॥

भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः सुकोमलान स्वच्छान् हरितदूर्वांकुरान् समर्पयामि।

शमीपत्रम्- (शमयति शोकादिकमिति शमी)

अमंगल निहन्त्रीं वै निहन्त्रीं दुष्कृतस्य च।
दुःस्वप्ननाशिनीं धन्यां प्रपद्येऽहं शमीं शुभाम्॥

भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः शमीपत्राणि समर्पयामि।

श्वेतार्कपुष्पम्- (मंद्यते=स्तूयते प्रशस्यते इति मंदारः)

श्वेतं श्वेतार्क-पुष्पं वै आयुष्याऽरोग्य-वर्धकम्।

शम्भुप्रियं प्रभायुक्तं मन्दारमर्पयाम्यहम्।।

भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः श्वेतार्कपुष्पं समर्पयामि।

धत्तूरपुष्पं फलम् च- (धयति पिबति सर्वधातूनिति)

मादकं मोदकं मुख्यं महाभैषजरुपकम्।
विकसितं फलं पुष्पं धत्तूरमर्पयामि वै।।

भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः धत्तूरपुष्पं फलं च समर्पयामि।

विजयाम्-

विजयां भक्तिदां पुण्यामौदार्य-भाववर्धिनीम्।
औदासीन्यप्रदां भद्रां विजयामर्पये शिव!।।

भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः विजयापत्रं च समर्पयामि।

तुलसीमंजरीम्-

शोकसन्तापहर्त्रीं च मंजुलां मंजरीं शुभां।
गृहाण देवदेवेश! प्रयच्छामि प्रयत्नतः।।

भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः तुलसीमंजरीं समर्पयामि।

सिन्दूरम्-

सिन्दूरं शोभनं शुद्धं सौभाग्यं सुखवर्द्धनम्।
शुभदं चैव मांगल्यं सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥
भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः सौभाग्य-सिन्दूरं समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्याणि- (अबीर गुलाल आदि)
अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम्।
नानापरिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वर!॥
भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सुगन्धितद्रव्यम्- (इत्र)
पुष्पसार-समुद्भूतमाह्लादकमनामयम्।
हृदयाकर्षकं शंभो! गृहाण शिवशंकर!॥
भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः सुगन्धितद्रव्यं समर्पयामि।

अंगपूजनम्- गन्ध, अक्षत, पुष्प आदि से भगवान शिव की अंग पूजा करें।
01. ह्रीं ईशानाय नमः पादौ पूजयामि।
02. ह्रीं शङ्कराय नमः जंघे पूजयामि।
03. ह्रीं शूलपाणये नमः गुल्फौ पूजयामि।
04. ह्रीं शम्भवे नमः कटिं पूजयामि।
05. ह्रीं स्वयम्भुवे नमः गुह्यं पूजयामि।
06. ह्रीं महादेवाय नमः नाभिं पूजयामि।

07. ह्रीं विश्वकर्त्रे नमः उदरं पूजयामि।
08. ह्रीं सर्वतोमुखाय नमः पार्श्वे पूजयामि।
09. ह्रीं स्थाणवे नमः स्तनौ पूजयामि।
10. ह्रीं नीलकण्ठाय नमः कण्ठं पूजयामि।
11. ह्रीं शिवात्मने नमः मुखं पूजयामि।
12. ह्रीं त्रिनेत्राय नमः नेत्रे पूजयामि।
13. ह्रीं नागभूषणाय नमः शिरः पूजयामि।
14. ह्रीं देवाधिदेवाय नमः सर्वांगं पूजयामि।

आवरणपूजनम्-

१. ह्रीं अघोराय नमः।
२. ह्रीं पशुपतये नमः।
३. ह्रीं शिवाय नमः।
४. ह्रीं विरूपाय नमः।
५. ह्रीं विश्वरूपाय नमः।
६. ह्रीं त्र्यम्बकाय नमः।
७. ह्रीं भैरवाय नमः।
८. ह्रीं कपर्दिने नमः।
९. ह्रीं शूलपाणये नमः।
१०. ह्रीं ईशानाय नमः।
११. ह्रीं महेशाय नमः।

एकादशशक्तिपूजनम्-

१. ह्रीं उमायै नमः।
२. ह्रीं शंकरप्रियायै नमः।
३. ह्रीं पार्वत्यै नमः।
४. ह्रीं गौर्यै नमः।
५. ह्रीं काटिव्यै नमः।
६. ह्रीं कालिन्द्यै नमः।
७. ह्रीं कोटर्यै नमः।
८. ह्रीं विश्वधारिण्यै नमः।
९. ह्रीं विश्वमात्रे नमः।
१०. ह्रीं भगवत्यै नमः।
११. ह्रीं विश्वेश्वर्यै नमः।

गणपूजनम्-

१. ह्रीं गणपतये नमः।	**२. ह्रीं कार्तिकेयाय नमः।**
३. ह्रीं पुष्पदन्ताय नमः।	**४. ह्रीं कपर्दिने नमः।**
५. ह्रीं भैरवाय नमः।	**६. ह्रीं शूलपाणये नमः।**
७. ह्रीं ईश्वराय नमः।	**८. ह्रीं दण्डपाणये नमः।**
९. ह्रीं नन्दिने नमः।	**१०. ह्रीं महाकालाय नमः।**

अष्टोत्तरशतनामभिः शिवार्चनम्- शिवजी के 108 नामों से पुष्प, अक्षत, बिल्वपत्र, कमलपुष्प, बादाम, काजू, द्राक्षा, दक्षिणा द्रव्य आदि से पूजन करें।

विनियोग- अस्य श्रीशिवाष्टोत्तरशतनाममंत्रस्य नारायणऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीसदाशिवो देवता गौरी उमाशक्तिः श्रीसाम्बसदाशिवप्रीतये अष्टोत्तरशतनामभिः शिवपूजने विनियोगः।

ध्यानम्-

शान्ताकारं शिखरिशयनं नीलकण्ठं सुरेशं
विश्वाधारं स्फटिकसदृशं शुभ्रवर्णं शुभाङ्गम्।
गौरीकान्तं त्रितयनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे शम्भुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

1. ह्रीं शिवाय नमः	2. ह्रीं महेश्वराय नमः	3. ह्रीं शम्भवे नमः
4. ह्रीं पिनाकिने नमः	5. ह्रीं शशिशेखराय नमः	6. ह्रीं वामदेवाय नमः
7. ह्रीं विरूपाक्षाय नमः	8. ह्रीं कपर्दिने नमः	9. ह्रीं नीललोहिताय नमः
10. ह्रीं शंकराय नमः	11. ह्रीं शूलपाणये नमः	12. ह्रीं खट्वाङ्गिने नमः

13. ह्रीं विष्णुवल्लभाय नमः 14. ह्रीं शिपिविष्टाय नमः 15. ह्रीं अम्बिकानाथाय नम
16. ह्रीं श्रीकण्ठाय नमः 17. ह्रीं भक्तवत्सलाय नमः 18. ह्रीं भवाय नमः
19. ह्रीं शर्वाय नमः 20. ह्रीं त्रिलोकीनाथाय नमः 21. ह्रीं शितिकण्ठाय नमः
22.ह्रीं शिवाप्रियाय नमः 23. ह्रीं उग्राय नमः 24. ह्रीं कपालिने नमः
25. ह्रीं कामारये नमः 26. ह्रीं अन्धकासुरसूदनाय नमः 27. ह्रीं गंगाधराय नमः
28.ह्रीं ललाटाक्षाय नमः 29. ह्रीं कालकालाय नमः 30. ह्रीं कृपानिधये नमः
31. ह्रीं भीमाय नमः 32. ह्रीं परशुहस्ताय नमः 33. ह्रीं मृगपाणये नमः
34. ह्रीं जटाधराय नमः 35. ह्रीं कैलाशवासिने नमः 36. ह्रीं कवचिने नमः
37. ह्रीं कठोराय नमः 38. ह्रीं त्रिपुरान्तकाय नमः 39. ह्रीं वृषाङ्काय नमः
40.ह्रीं वृषभारूढाय नमः 41. ह्रीं भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः 42. ह्रीं सामप्रियाय नमः
43. ह्रीं स्वरमयाय नमः 44. ह्रीं त्रिमूर्तये नमः 45. ह्रीं अश्विनीश्वराय नमः
46. ह्रीं सर्वज्ञाय नमः 47. ह्रीं परमात्मने नमः 48. ह्रीं सोमसूर्य्याग्नि लोचनाय नमः
49. ह्रीं हविषे नमः 50. ह्रीं यज्ञमयाय नमः 51. ह्रीं पचवक्त्राय नमः
52. ह्रीं सदाशिवाय नमः 53. ह्रीं विश्वेश्वराय नमः 54. ह्रीं वीरभद्राय नमः
55. ह्रीं गणनाथाय नमः 56. ह्रीं प्रजापतये नमः 57. ह्रीं हिरण्यरेतसे नमः
58. ह्रीं दुर्द्धर्षाय नमः 59. ह्रीं गिरीशाय नमः 60. ह्रीं गिरिशाय नमः
61. ह्रीं अनघाय नमः 62. ह्रीं भुजंगभूषणाय नमः 63. ह्रीं भर्गाय नमः
64. ह्रीं गिरिन्धन्वने नमः 65. ह्रीं गिरिप्रियाय नमः 66. ह्रीं अष्टमूर्तये नमः
67. ह्रीं अनेकात्मने नमः 68. ह्रीं सात्विकाय नमः 69. ह्रीं शुभविग्रहाय नमः
70. ह्रीं शाश्वताय नमः 71. ह्रीं खण्डपरशवे नमः 72. ह्रीं अजाय नमः
73. ह्रीं पाशविमोचकाय नमः 74. ह्रीं कृत्तिवाससे नमः 75. ह्रीं पुरारातये नमः
76. ह्रीं भगवते नमः 77. ह्रीं प्रमथाधिपाय नमः 78. ह्रीं मृत्युंजयाय नमः
79. ह्रीं सूक्ष्मतनवे नमः 80. ह्रीं जगद्व्यापिने नमः 81. ह्रीं जगद्गुरवे नमः
82. ह्रीं जनकाय नमः 83. ह्रीं चारूविक्रमाय नमः 84. ह्रीं रुद्राय नमः
85. ह्रीं भूतपतये नमः 86. ह्रीं स्थाणवे नमः 87. ह्रीं अहिर्बुध्न्याय नमः
88. ह्रीं दिगम्बराय नमः 89. ह्रीं मृडाय नमः 90. ह्रीं पशुपतये नमः
91. ह्रीं देवाय नमः 92. ह्रीं महादेवाय नमः 93. ह्रीं अव्ययाय नमः
94. ह्रीं हरये नमः 95. ह्रीं पुष्पदन्तभिदे नमः 96. ह्रीं भगनेत्रभिदे नमः
97. ह्रीं अपवर्गप्रदाय नमः 98. ह्रीं अव्यग्राय नमः 99. ह्रीं अव्यक्ताय नमः
100. ह्रीं अनन्ताय नमः 101. ह्रीं दक्षाध्वरहराय नमः 102. ह्रीं सहस्राक्षाय नमः
103. ह्रीं तारकाय नमः 104. ह्रीं हराय नमः 105. ह्रीं सहस्रपदे नमः
106. ह्रीं श्रीपरमेश्वराय नमः 107. ह्रीं व्रताधिपाय नमः 108. ह्रीं जगते नमः

धूपम्- भगवान् को धूप दिखायें

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्धमुत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः धूपं आघ्रापयामि।

दीपम्- भगवान् को दीपक दिखायें।

भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद् घोराद्दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते॥

भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः प्रत्यक्ष-दीपं सन्दर्शयामि।

ह्रीं नमः शिवाय यह मन्त्र बोलकर हाथ धोलें।

नैवेद्यम्- भोग (प्रसाद) को भगवान् के सामने रखें।

भावयुक्तं विशुद्धं वै द्रव्यशुद्धं च निर्मलम्।
भक्तिवृत्तिसमायुक्तं स्वहस्तेनैव निर्मितम्॥
सरसं परिपक्वं च पायसादि समन्वितम्।
नैवेद्यं गृह्यतां देव गव्यसिद्धं सुसात्विकम्॥

सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय सवाहनाय सपरिकराय अंगावरणदेवतासहिताय सर्वदेवमयाय सर्वाभीष्टफलप्रदाय भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः नैवेद्यं

निवेदयामि। नैवेद्य पर पवित्र जल से प्रोक्षण (छिड़काव) कर चन्दन और पुष्प चढ़ाकर तथा धेनुमुद्रा से अमृतीकरण कर योनिमुद्रा दिखायें और घण्टा बजा दें। पश्चात् ग्रासमुद्रा को दिखायें।

प्राणाय स्वाहा। अपानाय स्वाहा। व्यानाय स्वाहा।
उदानाय स्वाहा। समानाय स्वाहा।

फिर अग्रलिखित वाक्य पढ़ते हुए आचमनी से चार बार जल चढाएं-
मध्ये मध्ये पानीयं, उत्तरापोशनार्थं, हस्तप्रक्षालनार्थं, पुनः आचमनीय जलं च समर्पयामि।

उद्वर्तनम्- उबटन (घृताक्त नैवेद्य के कारण भगवान् की अंगुलियों में स्थित चिकनाई की सफाई के लिए चन्दनादि का छिड़काव करें)

स्नेहदिग्धकरार्थं यत् शोधनाय प्रकल्पितम्।
प्रीयतां हे महादेव! स्वीकृत्य चन्दनं विभो!॥

भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः उद्वर्तनार्थे चन्दनं विलेपयामि।

ऋतुफलम्-

दाडिमं दृढबीजं च रसालं कदलीफलम्।
स्वीकृत्यैतानि देवेश! जीवनं सफलं कुरु॥

भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः ऋतुफलानि समर्पयामि।

ताम्बूलम्- पान के पत्ते पर लवंग, इलायची, सुपारी रखकर निवेदन करें।

एला-लवंग संयुक्तं पूगीफल-समन्वितम्।

ताम्बूलं गृह्यतां देव! सौख्य-समृद्धि-कारकम्॥

भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः मुख शुद्ध्यर्थं ताम्बूलं समर्पयामि।

दक्षिणाम्-

दक्षिणा यज्ञभार्यास्ति यज्ञरूपोऽसि वै शिव।

पूजान्ते स्वीकुरु त्वं भा दिव्यां सर्वफलप्रदाम्॥

भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः साद्गुण्यार्थं सकलाभीष्ट फल प्राप्त्यर्थं द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

तर्पणम्- जल में अक्षत डाल कर अग्रलिखित एक एक नाम को बोलकर जल को किसी पात्र में छोड़ें।

1. ह्रीं भवं देवं तर्पयामि
2. ह्रीं शर्वं देवं तर्पयामि
3. ह्रीं ईशानं देवं तर्पयामि
4. ह्रीं पशुपतिं देवं तर्पयामि
5. ह्रीं उग्रं देवं तर्पयामि
6. ह्रीं रुद्रं देवं तर्पयामि
7. ह्रीं भीमं देवं तर्पयामि
8. ह्रीं महान्तं देवं तर्पयामि

1. ह्रीं भवस्व देवस्य पत्नीं तर्पयामि
2. ह्रीं शर्वस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि
2. ह्रीं ईशानस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि
4. ह्रीं पशुपतेर्देवस्य पत्नीं तर्पयामि
3. ह्रीं उग्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि
6. ह्रीं रुद्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि
4. ह्रीं भीमस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि
8. ह्रीं महतो देवस्य पत्नीं तर्पयामि

नीराजनम्- बहुविध सुसज्जित आरती की थाली में गन्धाक्षत-पुष्प चढ़ाकर आरती करें।

॥ शिवारार्तिक्यम् ॥

गंगाधर वृषभध्वज गोद्विजहितकारी।

श्रुतिसेतूसम्पालक जनमन अघहारी।। वं हर हर हर महादेव ।।१।।
विश्वनाथ विश्वंभर विश्वसृजनकर्ता।
दिव्यविभूतिधारी प्रलये जगहर्ता।। वं हर हर हर महादेव ।।२।।
हिमगिरिसुताविनंदित वंदित भद्रजनैः।
वरदायक विधिकर्ता मंडित रुद्रगणैः।। वं हर हर हर महादेव ।।३।।
भक्तजनानां हृदये राजति प्राणधरः।
रविशशिपावकनेत्र भक्तजनार्तिहरः।। वं हर हर हर महादेव ।।४।।
मतिगतिविरतिप्रदाता सम्पत्सुख दाता।
सुतवनितायशविद्या गृहपदधनदाता।। वं हर हर हर महादेव ।।५।।
देवासुरमुनिपूजित गुंजितवेदस्वरैः।
शुकसनकादिमुनीन्द्रैः सेवितदेववरैः।। वं हर हर हर महादेव ।।६।।
झंझंझंकृतझंझा शंखं नादयते।
धिनकधिनकधिनधिनधा मृदंग वादयते।। वं हर हर हर महादेव ।।७।।
ता ता थै थै नृत्यति गायति देवगणः।
तडतड तालीदानं हृष्यति भूतगणः।। वं हर हर हर महादेव ।।८।।
आरार्तिक्यं कुरुते श्रद्धाभक्तियुतः।
प्रातःसायंकाले भवति मुक्तिरतः।। वं हर हर हर महादेव ।।९।।
त्र्यम्बकलीलादिव्या त्र्यम्बकमुखगीता।
भावविशुद्धा विमला सरला सुपुनीता।। वं हर हर हर महादेव ।।१०।।

हाथ में जल लेकर आरती पर घुमाकर गिरा दें, फिर जल को अपने ऊपर छिड़क लें। हाथ में पुष्प लेकर आरती पर घुमाकर भगवान् के चरणों में अर्पित कर दें। भगवान् को आरती दिखायें तथा स्वयं आरती लें। तदनन्तर **ह्रीं नमः शिवाय** यह मन्त्र बोलकर हाथ धोलें।

पुष्पांजलिः- दोनों हाथों में पुष्प बिल्वपत्र दुर्वा लेकर मंत्र बोलें।

बिल्व-प्रवाल-करवीर-सरोज-कुंदैः
सौगन्ध्यसिक्त-सुमनैश्च शमी-सुपत्रैः।
श्रद्धाभरो विनयभूति-विभूति-वित्तः
पुष्पांजलिं वितनुते भवभक्तियुक्तः॥

सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय सवाहनाय सपरिकराय अंगावरणदेवतासहिताय सर्वदेवमयाय सर्वाभीष्टफलप्रदाय भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः मन्त्रपुष्पांजलिं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा/परिक्रमा-

परिक्रमा शुभप्रदा समस्तपापनाशिनी
पदे पदेऽश्वमेध-यागजन्यपुण्यदायिनी।
महेशपादपद्म-सौरभप्रदा सुमंगला
करोमि ते समन्ततः प्रसीद भूतिभूषणः॥

पंचांग/साष्टांग प्रणाम-

जानुभ्यां शिरसा चैव कराभ्यां भावुकः सुधीः।
प्रणम्य भावसंयुक्तोः पापतापाद् विमुच्यते॥
जानुस्कन्धकराभ्यां च उरसा शिरसा तथा।
प्रणमेद् दण्डवद्भूमौ भावुको भक्तितत्परः॥

अष्टमुर्तियोंकी पूजा-

अब गन्ध,अक्षत,पुष्पके द्वारा भगवान् शंकरकी आठों मुर्तियोंकी आठों दिशाओंमें पूजा करे-

१-	पूर्वदिशामें (पृथ्वीरूपमें)	ह्रीं शर्वाय क्षितिमूर्तये नमः।
२-	ईशानकोणमें (जलरूपमें)	ह्रीं भवाय जलमूर्तये नमः।
३-	उत्तरदिशामें (अग्निरूपमें)	ह्रीं रुद्राय अग्निमूर्तये नमः।
४-	वायव्यकोणमें (वायुरूपमें)	ह्रीं उग्राय वायुमूर्तये नमः
५-	पश्चिमदिशामें (आकाशरूपमें)	ह्रीं भीमाय आकाशमूर्तये नमः
६-	नैर्ऋत्यकोणमें (यजमानरूपमें)	ह्रीं पशुपतये यजमानमूर्तये नमः।
७-	दक्षिणदिशामें (चन्द्ररूपमें)	ह्रीं महादेवाय नमः सोममूर्तये नमः।
८-	अग्निकोणमें (सूर्यरूपमें)	ह्रीं ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः।

क्षमा प्रार्थना- हाथ जोड़कर प्रार्थना करें।

विश्वेश विश्वेश्वर विश्वमूर्ते दैत्यारिपद्मार्चनतृप्तचित्त।
पाहि प्रभो पाहि जगन्निवास आयाहि सौभाग्यसुधाविसिंधो॥१॥
पापप्रवाहाश्रयदीनबुद्धिः क्वाहं मदांधः क्व च दीनबंधुः।
दासोऽस्ति मत्वा प्रसमीक्ष्य कीर्तिं शुभ्रां निजं देहि शिवात्मभावम्॥२॥
क्वाहं लघिष्ठः क्व भवान् वरिष्ठः
छुद्रोऽस्मि क्वाहं क्व च भो विशिष्टः।
संबंधधारा प्रथिता पुराणी सिंधौ यथा बिन्दुनिपातयोगः॥३॥
चलत्तरंगाः यदि सिंधुरूपाः यथास्फुलिंगाः यदि वह्निरूपाः।
यथा जले भास्करबिंबसत्ता तथैव सोहं निजलाभपूर्णः॥४॥
देहि प्रकामं जगदीश योनिं कर्मानुरूपं ननु लोकमध्ये।
इच्छास्ति चित्ते हरिभक्तिगाथा सत्संगरूपेण सदैव भूयात्॥५॥
काशीवासः प्रतिदिनमहो पार्थिवी देवपूजा
शंभो शंभो हर हर महादेव संकीर्तनं वै।
शांतिश्चित्ते मदनदहनो वित्तरूपेणवृत्ते
गच्छत्वायुः हरिपदसुता तीरवासेन धन्यः॥

विशेषार्घ्यम्- एक पात्र में जल, चन्दन, पुष्प, अक्षत, बिल्वपत्र, सुपारी रखकर दोनों हाथों में लेकर अग्रलिखित मंत्र बोलकर जल को भगवान के चरणों में चढा दें।

रक्ष रक्ष महादेव! रक्ष त्रैलोक्य-शंकर!।

रक्षस्व पार्वतीनाथ! प्रसीद करुणाकर!॥

सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय सवाहनाय सपरिकराय अंगावरणदेवतासहिताय सर्वदेवमयाय सर्वाभीष्टफलप्रदाय भगवते साम्बसदाशिवाय चिन्तामणि-पार्थिवेश्वराय नमो नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

पूजा अर्पण- हाथ में जल लेकर अग्रलिखित वाक्य बोलें, फिर जल को भगवान् के चरणों में अर्पित कर दें।

अनेन यथा-उपलब्ध-उपचारेण यथाकाल-यथाज्ञान-यथाश्रद्धा-कृतेन पूजनेन सांगः सपरिवारः सायुधः सशक्तिकः सवाहनः सगणः सपरिकरः सर्वदेवमयः सर्वाभीष्टफलप्रदः पार्थिवेश्वरः साम्बसदाशिवः प्रीयतां न मम। शिवार्पणमस्तु, ब्रह्मार्पणमस्तु।

विसर्जनम्- बाएं हाथ में चावल लेकर दायें हाथ से भगवान पर अग्रलिखित मन्त्र बोलते हुए छोडें। (विसर्जन का भाव यह है कि पूजित मूर्तिस्थ परासत्ता प्रसन्न होकर मेरे हृदय में पुनः विराजित हो जायें।)

यथोपलब्ध-पूजां वै स्वीकृत्य तुष्टमानसः।

बहिष्टात् मृत्तिकाकारात् हृदि ह्यायातु शंकर!॥

पूजा की पूर्णता पर **शक्राय नमः** बोलकर आसन के नीचे जल डालकर सिर से लगायें।

॥ इति त्तशम् ॥

।। शिव-स्तुति ।।

विश्वनाथ! शशिशेखर! शम्भो! करुणाकर करुणा कर दो।
जीवन जगहित जले दीपसम दिव्यभाव मन में भर दो।। (टेक)

शिव शिव शंकर महादेव नित रटूं तुम्हारे नाम प्रभो,
रहूं कहीं भी ध्यान करूं तव तन्मय आठो याम प्रभो ।
विश्वास तैल पूरित दीपक ज्योती श्रद्धा जले सदा,
तुम हो मेरे मैं तेरा हूं यही भाव मन पले सदा ।।
बिना आपके रहूं न पलभर विरह तडफ का ही वर दो ।।1।।
विश्वनाथ! शशिशेखर! शम्भो! करुणाकर .....
मानव तन पाकर मानवता साध न पाया आज तलक,
ढूंढ लिया गिरि कन्दर मंदिर मिली न तेरी एक झलक।
समतामय मन चिन्तन घर से छलक रहा मधुमय निर्झर,
शोक मोह मद कोप काम तज रहता हर तुम पर निर्भर।।
नमन तुम्हीं को सतत करूं शिव ऐसा मम मानस कर दो ।।2।।
विश्वनाथ! शशिशेखर! शम्भो! करुणाकर .....
चींटी से ब्रह्मा तक सब में एक समायें आप प्रभो,
देख देख नित छवि आपकी कट जाते सब पाप प्रभो ।
तेरी पूजा तेरा वन्दन ध्यान मंत्र का जाप प्रभो,
भस्म तिलक रुद्राक्ष पहनकर मिट जाते अभिशाप प्रभो ।।
मल्लिकार्जुन भीमाशंकर निर्भयता का नव स्वर दो ।।3।।

विश्वनाथ! शशिशेखर! शम्भो! करुणाकर .....

तेरी पूजा से मेरा मन पा जाता विश्राम प्रभो,
तू जो संग में है तो जीतू जग के सब संग्राम प्रभो ।
हार जीत सुख दुख दोनों ही लगते आतप छांव प्रभो,
जगहितकारक तुम हो शंकर आनन्दों के धाम प्रभो ।।
गौरक्षा मख वेदधर्म के पालन की क्षमता हर! दो ।।4।।

विश्वनाथ! शशिशेखर! शम्भो! करुणाकर .....

ज्योतिर्लिंग की ज्योति देकर मोह तिमिर संत्रास हरो,
घुश्मेश्वर सिद्धेश्वर पशुपति साम्बसदाशिव पाश हरो ।
महाकाल नागेश्वर शम्भो मृगतृष्णा की प्यास हरो,
सोमनाथ ममलेश्वर भोले विषयों का अभ्यास हरो ।।
वैद्यनाथ रामेश्वर शंकर ज्ञान सुधा का सागर दो ।।5।।

विश्वनाथ! शशिशेखर! शम्भो! करुणाकर .....

जन्म मरण का चक्र कटे या भारत में फिर से आऊ,
काशी मथुरा अवध धरा पर प्रभु तेरे दर्शन पाऊ ।
सन्त दरश हरिकथा श्रवण कर गुरु चरणन में शिर नाऊ,
गंगा सरयू रेवा कृष्णा अवगाहन कर हरषाऊ ।।
करूं सार्थक अपना जीवन तत्त्व सनातन ईश्वर दो ।।6।।

विश्वनाथ! शशिशेखर! शम्भो! करुणाकर .....

जब जब पथ से भटकूं स्वामिन् मुझे सहारा देना तुम,
जन्म जन्म की विषय वासना कृपा दृष्टि से हरना तुम ।

मोह पटल का छेदन करके सत्य उजागर करना तुम,
भू जल अनल अनिल अंबर को रूप सुधा से भरना तुम ।।
मन धी अहं चित्त इन्द्री को सच्चित सुख विभु अक्षर दो ।।7।।
विश्वनाथ! शशिशेखर! शम्भो! करुणाकर .....
जाउ कहां तज शरण आपकी केदारेश्वर बतलाओ,
सरलहृदय सुरपूजित बाबा देर करो ना आ जाओ ।
अधम दीन पापी हूं गर तो पाप गिरी को तुम ढाओ,
वं वं अलख निरंजन भोले अकड बम की धुन गाओ ।।
त्र्यम्बक नर नारायण होवे ऐसा पारस पत्थर दो ।।8।।
विश्वनाथ! शशिशेखर! शम्भो! करुणाकर .....

।। श्री शिव-आरती ।।

चलो हम आरती कर लें शिवा के प्राणप्यारे की।
विरक्ती भक्ति दाता की अनाथों के सहारे की ।।

गले मुंडों की माला है जटा गंगा शशी सोहे ।
वृषभ आसीन शिवशंकर धवलिमा भस्म की मोहे ।।
भजन धनधन्य न्यारे की ।।१।। चलो हम आरती करलें .....
सदा धन धान्य बरसाते रुदन पर रीझ जाते जो ।
अजब लीला है दिखलाते हृदय में आ समाते जो ।।
नयन अनुपम सितारे की ।।२।। चलो हम आरती करलें .....

कलंकित शशि तिरस्कृत था पुजाया शिर बिठाकर के ।
अंधेरे दैन्य से पीडित दिया सबकुछ उठाकर के ।।
जनों के शिव उजारे की ।।३।। चलो हम आरती करलें .....
धतूरा बिल्व विजया ले शमी मन्दार जलधारा ।
भस्म लेपन रुद्रपूजा सदाशिव शिव का जयकारा ।।
पिता गुरु प्रभु हमारे की ।।४।। चलो हम आरती करलें .....
विरंची विष्णु इन्द्रादी मनुज मुनि यक्ष असुरादि ।
सभी पाते अभय वैभव विजय सम्मान पद गादी ।।
धनेश्वर उर दुलारे की ।।५।। चलो हम आरती करलें .....
गजानन अरु षडानन सुत उमा नन्दी सिंह परिकर ।
नयन तीनों नाग माला अजब धारे हो बाघम्बर ।।
मदन रिपु काम जारे की ।।६।। चलो हम आरती करलें .....
किसी से कुछ नहीं चाहे करें पूरी कामना शिव ।
तनय घर पद विजय त्र्यम्बक विभव विद्या लुटाते शिव ।।
त्रिपुर मय मख विदारे की ।।७।। चलो हम आरती करलें .....

।। प्रार्थना ।।

प्रसन्नो ददाति प्रपन्नानभीष्टं यथा ते हि वांछन्ति चित्तानुकूलम्।
सुरेशासुरेशाधरेशाधरेशा यथा त्वं दयालुस्तथा नास्ति लोके ।।१।।
न विष्णुर्विधातामहेन्द्रो कुबेरो उपेन्द्रो दिनेशो निशेशो जलेशः।
गणेशो नभेशो दिगेशो न शेषो भवानीश शम्भो त्वदन्यो न लोके ।।२।।

भवानेव दाता भवानेव भोक्ता भवानेव माता भवानेव तातः।
भवानेव बन्धुर्भवानेव भ्राता भवानेव शम्भो ममास्थाप्ररोह ।।३।।
भवन्तं विना नैव कंचित् हि जाने ममोद्धारकर्ता भवानेव शम्भो।
प्रदेहि प्रकामं प्रसंगं तवैव क्षमस्वापराधान् निजं मां हि मत्वा ।।४।।
कराभ्यां शिवार्चा मुखे शम्भुनाम श्रुतौ सत्कथा सर्वदा शाम्भवीयम्।
मदीये हि नेत्रे शिवस्यैव रूपं हृदिध्यानकाले शिवोऽहं शिवोऽहम् ।।५।।
न शत्रुर्न मित्रं परं नापरं वा शरीरं न मानापमानं हि किंचित्।
न हानिर्न लाभो न दुःखं न सौख्यं सदा त्वां स्मरेयं सदा त्वां भजेयम् ।।६।।
न जानामि पूजां न जानामि भक्तिं न जानामि रीतिं न जानामि नीतिम्।
न जानामि मंत्रं न जानामि तन्त्रं न जानामि यन्त्रं महादेव पाहि ।।७।।
न चित्तेऽस्ति भावः प्रमादाभिमानी अहंकारनागेन दष्टो विमत्तः।
ममास्त्यत्र लोके न कश्चित् मदीयः महादेव पाहीति भूयो वदामि ।।८।।

।। शिवपंचकम् ।।

शिवा-करांघ्रि-लालितं जटा-कटाह-शोभितं
सुरा-सुरै र्विनन्दितं महर्षि-हर्ष-हर्षितम् ।
अभीष्ट-सिद्धि-दायकं प्रसन्नता-विधायकं
समष्टि-शक्ति-साधकं नमामि शंकरं प्रभुम् ।।१।।
गणेश-कार्तिकेय-वीरभद्र-नन्दिकेश्वरैः
कुबेर-बाण-रावणादिभिस्-सदा-प्रपूजितम् ।
अघान्तकं भवान्तकं युगान्तकं पुरान्तकं
समष्टि-शक्ति-साधकं नमामि शंकरं प्रभुम् ।।२।।

उमेश्वरं वृषेश्वरं परेश्वरं महेश्वरं
कलेश्वरं भवेश्वरं मखेश्वरं प्रजेश्वरम् ।
धरेश्वरं धनेश्वरं बुधेश्वरं हरेश्वरं
समष्टि-शक्ति-साधकं नमामि शंकरं प्रभुम् ।।३।।
सता-मशोक-कारकं च दु:ख-दोष-दारकं
दया-समुद्र-रूपकं वर-प्रदायकं वरम् ।
जगल्लया-श्रयं शिवं विशुद्ध-बोध-रूपकं
समष्टि-शक्ति-साधकं नमामि शंकरं प्रभुम् ।।४।।
अभीष्ट-कामना-करं प्रकृष्ट-चेतना-परं
महा-विभूति-भूति-भाव-वर्धनाय-तत्परम् ।
समस्त लोक-तारकं प्रचंडवेग धारकं
समष्टि-शक्ति-साधकं नमामि शंकरं प्रभुम् ।।५।।
शक्ति-भक्ति-प्रदं दिव्यं भुक्ति-मुक्ति-प्रदायकम् ।
करोति त्र्यम्बको भक्त्या शिव-शंकर-पंचकम् ।।

।। श्रीविश्वनाथपंचकम् ।।

यस्यांके गिरिराजराजतनया श्यामा जगद्वल्लभा
यस्यैकांशकणेन लोकरचना मान्या विवर्तात्मिका ।
नन्दीस्कन्दगणेशशेषमुनिभि: पूज्यं प्रभुं शाश्वतं
तं वन्दे भवसिन्धुतारणपरं श्रीविश्वनाथं विभुम् ।।१।।
दौर्भाग्याब्धिघटोद्भवं कलिमलप्रध्वंसिनं हीश्वरं

श्रद्धाभावभरैः सुरासुरवरैः संसेवितं सर्वदा ।
विज्ञानाम्बरभास्करं सुललितं मुक्तिप्रदं कामदं
तं वन्दे भवसिन्धुतारणपरं श्रीविश्वनाथं विभुम् ।।२।।
यत्साद्गुण्य-परागपुंज-रसिकैः मत्तालिभिः साधुभिः
गीयन्ते सुकथाः सदा भुवितले वैराग्यबोधाश्रयाः ।
काशीस्थं सुरवृन्दवन्दितपदं श्रीशंकरं शंकरम्
तं वन्दे भवसिन्धुतारणपरं श्रीविश्वनाथं विभुम् ।।३।।
सौभाग्यामृतदायकं सुरनुतं सिद्धिप्रदं सौख्यदं
विश्वासाश्रयपोषकं मुनिजनैः सम्पूजितं बुद्धिदम् ।
भक्ताभीष्टकरं प्रसन्नवदनं दक्षाध्वरध्वंसकं
तं वन्दे भवसिन्धुतारणपरं श्रीविश्वनाथं विभुम् ।।४।।
ब्रह्माविष्णुसुरेन्द्र-वन्दितपदं सर्वार्थसंसाधकं
मोहध्वान्तहरं प्रपंचशमनं पंचाननं कामदम् ।
गंगातीरविराजितं हरिहरानन्दार्चितं दैवतं
तं वन्दे भवसिन्धुतारणपरं श्रीविश्वनाथं विभुम् ।।५।।
विश्वनाथप्रसादेन विश्वनाथकृपाकरम् ।
त्र्यम्बकः स्तौति भक्त्या वै श्रीविश्वनाथपंचकम् ।।

।। श्री शिव-पंचाक्षर-स्तोत्रम् ।।

नगेशो नागेशो नगपतिसुतेशो नटवरो
नराणामीशेशो नवनिधि निवेशो ननु नृपः ।

नदीशो नित्येशो निरयनृपतीशो निगमवाक्
निरीशो नो नेयात् निजजननिवासे नगपतौ ।।१।।
महादेवो मान्यो मदनमथनो माधवमतिः
महोक्षाध्यारूढो मणिमय-महामण्डप युतः ।
महावीरो मुख्यो मनुजमतिमालिन्यमलयो
महेशो मुक्तेशो मम मनसि निष्ठो भवतु मः ।।२।।
शिवः शान्तः सत्यः सकलजनवन्द्यः श्रुतिनुतः
शमीपत्रैः पूज्यः सरसिजकुलैश्चापि सलिलैः।
सदा शैले शुभ्रे निवसति सदानन्दसहितः
समाधिस्थः सिद्धः शशिसकलशीर्षः समवतु ।।३।।
वरिष्ठो विश्वेशो विषधरवरैः भूषितवपुः
विदग्धो व्याख्याने वचनरचनाविज्ञवरदः ।
विरागाख्ये वित्ते विपुलविभवो वन्दितवरो
वरेण्यो वागीशो वरवृषभवाहो विजयते ।।४।।
यदृच्छासन्तुष्टो युवतिशतयूथेन भरितः
यजुर्वेदज्ञैः वै यमनियममार्गेण कलितः ।
यथेष्टं यत् द्रव्यं वितरतु च यक्षाधिपपतिः
यतीशो यज्ञेशो यदुकुलपतेर्माधवसखा ।।५।।
पंचाक्षरात्मकं पुण्यं स्तोत्रं भक्तिप्रवर्धकम् ।
महादेव-प्रसादार्थं कुरुते त्र्यम्बकः सुधी ।।

卐 शिवसहस्रनामावलि 卐

विनियोगः- हाथ में जल लेकर विनियोग करें।

अस्य श्रीसदाशिवसहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य नारायणऋषिः श्रीसदाशिवो देवता अनुष्टुप् छन्दः सदाशिवो बीजं गौरीशक्तिः श्रीसदाशिवप्रीत्यर्थं तद्दिव्यसहस्रानामभिः अमुक द्रव्यसमर्पणे विनियोगः।

ध्यानम्-

ह्रीं स्थिराय नमः, ह्रीं स्थाणवे नमः ह्रीं प्रभवे नमः
ह्रीं भीमाय नमः, ह्रीं प्रवराय नमः ह्रीं वरदाय नमः
ह्रीं वराय नमः, ह्रीं सर्वात्मने नमः ह्रीं सर्वविख्याताय नमः
ह्रीं सर्वस्मै नमः, ह्रीं सर्वकराय नमः ह्रीं भवाय नमः
ह्रीं जटिने नमः, ह्रीं चर्मिणे नमः ह्रीं शिखण्डिने नमः
ह्रीं सर्वांगाय नमः ह्रीं सर्वभावनाय नमः ह्रीं हराय नमः
ह्रीं हरिणाक्षाय नमः ह्रीं सर्वभूतहराय नमः ह्रीं प्रभवे नमः
ह्रीं प्रवृत्तये नमः, ह्रीं निवृत्तये नमः ह्रीं नियताय नमः
ह्रीं शाश्वताय नमः ह्रीं ध्रुवाय नमः ह्रीं श्मशानवासिने नमः
27

ह्रीं भगवते नमः ह्रीं खचराय नमः ह्रीं गोचराय नमः
ह्रीं अर्दनाय नमः ह्रीं अभिवाद्याय नमः ह्रीं महाकर्मणे नमः
ह्रीं तपस्विने नमः ह्रीं भूतभावनाय नमः ह्रीं उन्मत्तवेषप्रच्छन्नाय नमः
ह्रीं सर्वलोकप्रजापतये नमः ह्रीं महारूपाय नमः ह्रीं महाकायाय नमः
ह्रीं वृषरूपाय नमः ह्रीं महायशसे नमः ह्रीं महात्मने नमः
ह्रीं सर्वभूतात्मने नमः ह्रीं विश्वरूपाय नमः ह्रीं महाहनवे नमः
ह्रीं लोकपालाय नमः ह्रीं अन्तर्हितात्मने नमः ह्रीं प्रसादाय नमः
ह्रीं हयगर्दभये नमः ह्रीं पवित्राय नमः ह्रीं महते नमः
ह्रीं नियमाय नमः ह्रीं नियमाश्रिताय नमः ह्रीं सर्वकर्मणे नमः
54

ह्रीं स्वयंभूताय नमः ह्रीं आदये नमः ह्रीं आदिकराय नमः

ह्रीं निधये नमः
ह्रीं सहस्त्राक्षाय नमः
ह्रीं विशालाक्षाय नमः
ह्रीं सोमाय नमः
ह्रीं नक्षत्रसाधकाय नमः
ह्रीं चंद्राय नमः
ह्रीं सूर्याय नमः
ह्रीं शनये नमः
ह्रीं केतवे नमः
ह्रीं ग्रहाय नमः
ह्रीं ग्रहपतये नमः
ह्रीं वराय नमः
ह्रीं अत्रये नमः
ह्रीं अत्र्या नमस्कर्त्रे नमः
ह्रीं मृगबाणार्पणाय नमः
ह्रीं अनघाय नमः
ह्रीं महातपसे नमः,
ह्रीं घोरतपसे नमः
ह्रीं अदीनाय नमः
ह्रीं दीनसाधकाय नमः
ह्रीं संवत्सरकराय नमः
ह्रीं मन्त्राय नमः
ह्रीं प्रमाणाय नमः
ह्रीं परमायअ तपसे नमः
ह्रीं योगिने नमः
ह्रीं योज्याय नमः
ह्रीं महाबीजाय नमः
84

ह्रीं महारेतसे नमः,
ह्रीं महाबलाय नमः,
ह्रीं सुवर्णरेतसे नमः
ह्रीं सर्वज्ञाय नमः,
ह्रीं सुबीजाय नमः,
ह्रीं बीजवाहदनाय नमः
ह्रीं दशबाहवे नमः
ह्रीं अनिमिषाय नमः
ह्रीं नीलकण्ठाय नमः
ह्रीं उमापतये नमः
ह्रीं विश्वरूपाय नमः
ह्रीं स्वयं श्रेष्ठाय नमः
ह्रीं बलवीराय नमः
ह्रीं अबलगणाय नमः
ह्रीं गणकर्त्रे नमः
ह्रीं गणपतये नमः 100

ह्रीं दिग्वाससे नमः
ह्रीं कामाय नमः
ह्रीं मन्त्रविदे नमः
ह्रीं परममन्त्र नमः
ह्रीं सर्वभावकराय नमः
ह्रीं हराय नमः
ह्रीं कमण्डलुधराय नमः
ह्रीं धन्विने नमः
ह्रीं बाणहस्ताय नमः
ह्रीं कपालवते नमः
ह्रीं अशनिने नमः
ह्रीं शतघ्निने नमः
ह्रीं खडग्गिने नमः
ह्रीं पट्टिशिने नमः
114

ह्रीं आयुधिने नमः
ह्रीं महते नमः
ह्रीं स्त्रुवहस्ताय नमः
ह्रीं सुरूपाय नमः
ह्रीं तेजसे नमः
ह्रीं तेजस्करनिधये नमः
ह्रीं उष्णीषिणे नमः
ह्रीं सुवक्त्राय नमः
ह्रीं उदग्राय नमः
ह्रीं विनताय नमः
ह्रीं दीर्घाय नमः
ह्रीं हरिकेशाय नमः
ह्रीं सुतीर्थाय नमः
ह्रीं कृष्णाय नमः
ह्रीं श्रृगालरूपाय नमः

ह्रीं सिद्धार्थाय नमः ह्रीं मुण्डाय नमः ह्रीं सर्वशुभङ्कराय नमः
ह्रीं अजाय नमः ह्रीं बहुरूपाय नमः ह्रीं गन्धधारिणे नमः,
ह्रीं कपर्दिने नमः ह्रीं उर्ध्वरेतसे नमः ह्रीं उर्ध्वलिङ्गाय नमः
ह्रीं उर्ध्वशायिने नमः ह्रीं नभः स्थलाय नमः ह्रीं त्रिजटाय नमः
ह्रीं चीरवाससे नमः ह्रीं रुद्राय नमः ह्रीं सेनापतये नमः
144

ह्रीं विभवे नमः ह्रीं अहश्चराय नमः ह्रीं नक्तंचराय नमः
ह्रीं तिग्ममन्यवे नमः ह्रीं सुवर्चसाय नमः ह्रीं गजघ्ने नमः
ह्रीं दैत्यघ्ने नमः ह्रीं कालाय नमः ह्रीं लोकधात्रे नमः
ह्रीं गुणाकराय नमः ह्रीं सिंहशार्दूलरूपाय नमः ह्रीं आर्द्रचर्माम्बरावृताय नमः
ह्रीं कालयोगिने नमः ह्रीं महानादाय नमः ह्रीं सर्वकामाय नमः
ह्रीं चतुष्पथाय नमः ह्रीं निशाचराय नमः ह्रीं प्रेतचारिणे नमः
ह्रीं भूतचारिणे नमः ह्रीं महेश्वराय नमः ह्रीं बहुभूताय नमः
ह्रीं बहुधराय नमः ह्रीं स्वर्भानवे नमः ह्रीं अमिताय नमः
ह्रीं गतये नमः ह्रीं नृत्यप्रियाय नमः ह्रीं नृत्यनर्ताय नमः
ह्रीं नर्तकाय नमः ह्रीं सर्वलालसाय नमः ह्रीं घोराय नमः
174

ह्रीं महातपसे नमः ह्रीं पाशाय नमः ह्रीं नित्याय नमः
ह्रीं गिरिरुहाय नमः ह्रीं नभसे नमः ह्रीं सहस्त्रहस्ताय नमः
ह्रीं विजयाय नमः ह्रीं व्यवसायाय नमः ह्रीं अतन्द्रिताय नमः
ह्रीं अधर्षणाय नमः ह्रीं धर्षणात्मने नमः ह्रीं यज्ञघ्ने नमः
ह्रीं कामनाशकाय नमः ह्रीं दक्षयागापहारिणे नमः ह्रीं सुसहाय नमः
ह्रीं मध्यमाय नमः ह्रीं तेजोऽपहारिणे नमः ह्रीं बलघ्ने नमः
ह्रीं मुदिताय नमः ह्रीं अर्थाय नमः ह्रीं अजिताय नमः
ह्रीं अवराय नमः ह्रीं गम्भीरघोषाय नमः ह्रीं गम्भीराय नमः
ह्रीं गम्भीरबलवाहनाय नमः ह्रीं न्यग्रोधरूपाय नमः ह्रीं न्यग्रोधाय नमः
ह्रीं वृक्षकर्णस्थितये नमः ह्रीं विभवे नमः ह्रीं सुतीक्ष्णदशनाय नमः
204

ह्रीं महाकायाय नमः ह्रीं महाननाय नमः ह्रीं विष्वक्सेनाय नमः
ह्रीं हरये नमः ह्रीं यज्ञाय नमः, ह्रीं संयुगापीडवाहनाय नमः
ह्रीं तीक्ष्णतापाय नमः ह्रीं हर्यश्वाय नमः, ह्रीं सहायाय नमः

ह्रीं कर्मकालविदे नमः ह्रीं विष्णुप्रसादिताय नमः ह्रीं यज्ञाय नमः
ह्रीं समुद्राय नमः ह्रीं वडवामुखाय नमः ह्रीं हुताशनसहायाय नमः
ह्रीं प्रशान्तात्मने नमः ह्रीं हुताशनाय नमः ह्रीं उग्रतेजसे नमः
ह्रीं महातेजसे नमः ह्रीं जन्याय नमः ह्रीं विजयकालविदे नमः
ह्रीं ज्योतिषामयनाय नमः ह्रीं सिद्धये नमः, ह्रीं सर्वविग्रहाय नमः
ह्रीं शिखिने नमः ह्रीं मुण्डिने नमः ह्रीं जटिने नमः,
ह्रीं ज्वालिने नमः ह्रीं मूर्तिजाय नमः ह्रीं मूर्द्धगाय नमः
234

ह्रीं बलिने नमः ह्रीं वेणविने नमः ह्रीं पणविने नमः
ह्रीं तालिने नमः ह्रीं खलिने नमः ह्रीं कालकंटकटाय नमः
ह्रीं नक्षत्रविग्रहमतये नमः ह्रीं गुणबुद्धये नमः ह्रीं लयाय नमः
ह्रीं अगमाय नमः ह्रीं प्रजापतये नमः ह्रीं विश्वबाहवे नमः
ह्रीं विभागाय नमः ह्रीं सर्वगाय नमः ह्रीं अमुखाय नमः
ह्रीं विमोचनाय नमः ह्रीं सुसरणाय नमः ह्रीं हिरण्यकवचोभ्दवाय नमः
ह्रीं मेढ्रजाय नमः ह्रीं बलचारिणे नमः ह्रीं महीचारिणे नमः
ह्रीं स्त्रुताय नमः ह्रीं सर्वतूर्यनिनादिने नमः ह्रीं सर्वतोद्यपरिग्रहाय नमः
ह्रीं व्यालरूपाय नमः ह्रीं गुहावासिने नमः ह्रीं गुहाय नमः,
ह्रीं मालिने नमः ह्रीं तरङ्गविदे नमः ह्रीं त्रिदशाय नमः
264

ह्रीं त्रिकालधृषे नमः ह्रीं कर्मसर्वबन्धविमोचनाय नमः
ह्रीं असुरेन्द्राणां बन्धनाय नमः ह्रीं युधि शत्रुविनाशनाय नमः
ह्रीं सांख्यप्रसादाय नमः ह्रीं दुर्वाससे नमः, ह्रीं सर्वसाधुनिषेविताय नमः
ह्रीं प्रस्कन्दनाय नमः ह्रीं विभागज्ञाय नमः, ह्रीं अतुल्याय नमः
ह्रीं यज्ञविभागविदे नमः ह्रीं सर्ववासाय नमः ह्रीं सर्वचारिणे नमः
ह्रीं दुर्वाससे नमः ह्रीं वासवाय नमः ह्रीं अमराय नमः
ह्रीं हैमाय नमः ह्रीं हेमकराय नमः ह्रीं अयज्ञाय नमः
ह्रीं सर्वधारिणे नमः ह्रीं धरोत्तमाय नमः ह्रीं लोहिताक्षाय नमः
ह्रीं महाक्षाय नमः ह्रीं विजयाक्षाय नमः ह्रीं विशारदाय नमः
ह्रीं संग्रहाय नमः ह्रीं निग्रहाय नमः ह्रीं कर्त्रे नमः
ह्रीं सर्पचीरनिवासनाय नमः ह्रीं मुख्याय नमः, ह्रीं अमुख्याय नमः
ह्रीं देहाय नमः ह्रीं काहलये नमः ह्रीं सर्वकामदाय नमः

ह्रीं सर्वकालप्रसादाय नमः ह्रीं सुबलाय नमः
(३००)

ह्रीं बलरूपधृषे नमः ह्रीं सर्वकामवराय नमः ह्रीं सर्वदाय नमः
ह्रीं सर्वतोमुखाय नमः ह्रीं आकाशनिर्विरूपाय नमः ह्रीं निपातिने नमः
ह्रीं अवशाय नमः ह्रीं खगाय नमः ह्रीं रौद्ररूपाय नमः
ह्रीं अंशवे नमः ह्रीं आदित्याय नमः ह्रीं बहुरश्मये नमः
ह्रीं वसुवेगाय नमः ह्रीं महावेगाय नमः ह्रीं मनोवेगाय नमः
ह्रीं निशाचराय नमः ह्रीं सर्ववासिने नमः ह्रीं श्रियावासिने नमः
ह्रीं उपदेशकराय नमः ह्रीं अकराय नमः ह्रीं मुनये नमः
ह्रीं आत्मनिरालोकाय नमः ह्रीं सम्भग्नाय नमः
324

ह्रीं सहस्रदाय नमः ह्रीं पक्षिणे नमः ह्रीं पक्षरूपाय नमः
ह्रीं अतिदीप्ताय नमः ह्रीं विशाम्पतये नमः ह्रीं उन्मादाय नमः
ह्रीं मदनाय नमः ह्रीं कामाय नमः ह्रीं अश्वत्थाय नमः
ह्रीं अर्थकराय नमः ह्रीं यशसे नमः ह्रीं वामदेवाय नमः
ह्रीं वामाय नमः ह्रीं प्राच्यै नमः ह्रीं दक्षिणाय नमः
ह्रीं वामनाय नमः ह्रीं सिद्धयोगिने नमः ह्रीं महर्षये नमः
ह्रीं सिद्धार्थाय नमः ह्रीं सिद्धसाधकाय नमः ह्रीं भिक्षवे नमः
ह्रीं भिक्षुरूपाय नमः ह्रीं विपणाय नमः ह्रीं मृदवे नमः
ह्रीं अव्ययाय नमः ह्रीं महासेनाय नमः ह्रीं विशाखाय नमः
ह्रीं षष्टिभागाय नमः ह्रीं गवाम्पतये नमः ह्रीं वज्रहस्ताय नमः
354
ह्रीं विष्कम्भिने नमः ह्रीं चमूस्तम्भनाय नमः ह्रीं वृत्तवृत्तकराय नमः
ह्रीं तालाय नमः ह्रीं मधवे नमः ह्रीं मधुकलोचनाय नमः
ह्रीं वाचस्पम्याय नमः ह्रीं वाजसनाय नमः ह्रीं नित्यमाश्रमपूजिताय नमः
ह्रीं ब्रह्मचारिणे नमः ह्रीं लोकचारिणे नमः ह्रीं सर्वचारिणे नमः
ह्रीं विचारविदे नमः ह्रीं ईशानाय नमः ह्रीं ईश्वराय नमः
ह्रीं कालाय नमः ह्रीं निशाचारिणे नमः ह्रीं पिनाकवते नमः
ह्रीं निमित्तस्थाय नमः ह्रीं निमित्ताय नमः ह्रीं नन्दये नमः

ह्रीं नन्दिकराय नमः ह्रीं हरये नमः ह्रीं नन्दीश्वराय नमः
ह्रीं नन्दिने नमः ह्रीं नन्दनाय नमः ह्रीं नन्दिवर्द्धनाय नमः
ह्रीं भगहारिणे नमः ह्रीं निहन्त्रे नमः ह्रीं कालाय नमः
384

ह्रीं ब्रह्मणे नमः ह्रीं पितामहाय नमः ह्रीं चतुर्मुखाय नमः
ह्रीं महालिंगाय नमः ह्रीं चारूलिंगाय नमः ह्रीं लिंगाध्यक्षाय नमः
ह्रीं सुराध्यक्षाय नमः ह्रीं योगाध्यक्षाय नमः ह्रीं युगावहाय नमः
ह्रीं बीजाध्यक्षाय ह्रीं बीजकर्त्रे नमः ह्रीं अध्यात्मानुगनाय नमः
ह्रीं बलाय नमः, ह्रीं इतिहासाय नमः ह्रीं सकल्पाय नमः
ह्रीं गौतमाय नमः ह्रीं निशाकराय नमः ह्रीं दम्भाय नमः
ह्रीं अदम्भाय नमः ह्रीं वैदम्भाय नमः ह्रीं वश्याय नमः
ह्रीं वशकराय नमः ह्रीं कलये नमः ह्रीं लोककर्त्रे नमः
ह्रीं पशुपतये नमः ह्रीं महाकर्त्रे नमः ह्रीं अनौषधाय नमः
ह्रीं अक्षराय नमः ह्रीं परमाय ब्रह्मणे नमः ह्रीं बलवते नमः
414

ह्रीं शक्राय नमः ह्रीं नीतये नमः ह्रीं अनीतये नमः
ह्रीं शुद्धात्मने नमः ह्रीं शुद्धाय नमः ह्रीं मान्याय नमः
ह्रीं गतागताय नमः ह्रीं बहुप्रसादाय नमः ह्रीं सुस्पप्नाय नमः
ह्रीं दर्पणाय नमः ह्रीं अमित्रजिते नमः ह्रीं वेदकाराय नमः
ह्रीं मंत्रकाराय नमः ह्रीं विदुषे नमः ह्रीं समरमर्दनाय नमः
ह्रीं महामेघनिवासिने नमः ह्रीं महाघोराय नमः ह्रीं वशिने नमः
ह्रीं कराय नमः ह्रीं अग्निज्वालाय नमः ह्रीं महाज्वालाय नमः
ह्रीं अतिधूम्राय नमः ह्रीं हुताय नमः ह्रीं हविषे नमः
ह्रीं वृषणाय नमः ह्रीं शंकराय नमः ह्रीं नित्यं वर्चस्विने नमः
ह्रीं धूमकेतनाय नमः ह्रीं नीलाय नमः ह्रीं अंगलुब्धाय नमः
444

ह्रीं शोभनाय नमः ह्रीं निरवग्रहाय नमः ह्रीं स्वस्तिदाय नमः,
ह्रीं स्वस्तिभावाय नमः ह्रीं भागिने नमः ह्रीं भागकराय नमः
ह्रीं लघवे नमः ह्रीं उत्संगाय नमः ह्रीं महांगाय नमः
ह्रीं महागर्भपरायणाय नमः ह्रीं कृष्णवर्णाय नमः ह्रीं सुवर्णाय नमः
ह्रीं सर्वदेहिनामिनिन्द्रायाय नमः ह्रीं महापादाय नमः ह्रीं महाहस्ताय नमः

ह्रीं महाकायाय नमः
ह्रीं महायशसे नमः
ह्रीं महामूर्धने नमः
ह्रीं महामात्राय नमः
ह्रीं महानेत्राय नमः
ह्रीं निशालयाय नमः
ह्रीं महान्तकाय नमः
ह्रीं महाकर्णाय नमः
ह्रीं महोष्ठाय नमः
ह्रीं महाहनवे नमः
ह्रीं महानासाय नमः
ह्रीं महाकम्बवे नमः
ह्रीं महाग्रीवाय नमः
ह्रीं श्मशानभाजे नमः
ह्रीं महावक्षसे नमः
474

ह्रीं महोरस्काय नमः
ह्रीं अन्तरात्मने नमः
ह्रीं मृगालयाय नमः
ह्रीं लंबनाय नमः
ह्रीं लम्बितोष्ठाय नमः
ह्रीं महामायाय नमः
ह्रीं पयोनिधये नमः
ह्रीं महादन्ताय नमः
ह्रीं महादंष्ट्राय नमः
ह्रीं महाजिह्वाय नमः
ह्रीं महामुखाय नमः
ह्रीं महानखाय नमः
ह्रीं महारोम्णे नमः
ह्रीं महाकेशाय नमः
ह्रीं महाजटाय नमः
ह्रीं प्रसन्नाय नमः
ह्रीं प्रसादाय नमः
ह्रीं प्रत्ययाय नमः
ह्रीं गिरिसाधनाय नमः
ह्रीं स्नेहनाय नमः
ह्रीं अस्नेहनाय नमः
ह्रीं अजिताय नमः
ह्रीं महामुनये नमः
ह्रीं वृक्षाकाराय नमः
ह्रीं वृक्षकेतवे नमः
ह्रीं अनलाय नमः
ह्रीं वायुवाहनाय नमः
ह्रीं गण्डलिने नमः
ह्रीं मेरूधाम्ने नमः
ह्रीं देवाधिपतये नमः
ह्रीं अथर्वशीर्षाय नमः
505

ह्रीं सामास्या नमः
ह्रीं ऋक्सहस्त्रामितेक्षणाय नमः
ह्रीं यजुः पादभुजाय नमः
ह्रीं गुह्याय नमः
ह्रीं प्रकाशाय नमः
ह्रीं जंगमाय नमः
ह्रीं अमोघार्थाय नमः
ह्रीं प्रसादाय नमः
ह्रीं अभिगम्याय नतः
ह्रीं सुदर्शनाय नमः
ह्रीं उपकाराय नमः
ह्रीं प्रियाय नमः
ह्रीं सर्वस्मै नमः
ह्रीं कनकाय नमः
ह्रीं काञ्चनच्छवये नमः
ह्रीं नाभये नमः
ह्रीं नन्दिकराय नमः
ह्रीं भावाय नमः
ह्रीं पुष्करस्थपतये नमः
ह्रीं स्थिराय नमः
ह्रीं द्वादशाय नमः
ह्रीं त्रासनाय नमः
ह्रीं आद्याय नमः
ह्रीं यज्ञाय नमः
ह्रीं यज्ञसमाहिताय नमः
ह्रीं नक्ताय नमः
ह्रीं कलये नमः
ह्रीं कलाय नमः
ह्रीं मकराय नमः
ह्रीं कालपूजिताय नमः
ह्रीं सगणाय नमः
536

ह्रीं गणकराय नमः ह्रीं भूतवाहनसारथये नमः, ह्रीं भस्मशयाय नमः
ह्रीं भस्मगोप्त्रे नमः ह्रीं भस्मभूताय नमः, ह्रीं तरवे नमः
ह्रीं गणाय नमः ह्रीं लोकपालाय नमः, ह्रीं अलोकाय नमः
ह्रीं महात्मने नमः ह्रीं सर्वपूजिताय नमः, ह्रीं शुक्लाय नमः
ह्रीं त्रिशुक्लाय नमः ह्रीं सम्पन्नाय नमः, ह्रीं शुचये नमः
ह्रीं भूतनिषेविताय नमः ह्रीं आश्रमस्थाय नमः, ह्रीं क्रियावस्थाय नमः
ह्रीं विश्वकर्ममतये नमः ह्रीं वराय नमः, ह्रीं विशालशाखाय नमः
ह्रीं ताम्रोष्ठाय नतः ह्रीं अम्बुजालाय नमः ह्रीं सुनिश्चलाय नमः
ह्रीं कपिलाय नमः ह्रीं कपिशाय नमः, ह्रीं शुक्लाय नमः
ह्रीं आयुषे नमः ह्रीं परस्मै नमः, ह्रीं अपरस्मै नमः
ह्रीं गंधर्वाय नमः
567

ह्रीं अदितये नमः ह्रीं तार्क्ष्याय नमः ह्रीं सुविज्ञेयाय नमः
ह्रीं सुशारदाय नमः ह्रीं परश्वधायुधाय नमः ह्रीं देवाय नमः
ह्रीं अनुकारिणे नमः ह्रीं सुबान्धवाय नमः ह्रीं तुम्बवीणाय नमः
ह्रीं महाक्रोधाय नमः ह्रीं ऊर्ध्वरेतसे नमः ह्रीं जलेशयाय नमः
ह्रीं उग्राय नमः ह्रीं वंशकराय नमः, ह्रीं वंशाय नमः
ह्रीं वंशनादाय नमः ह्रीं अनिन्दिताय नमः ह्रीं सर्वाङ्गरूपाय नमः
ह्रीं मायाविने नमः ह्रीं सुहृदे नमः, ह्रीं अनिलाय नमः
ह्रीं अनलाय नमः ह्रीं बन्धनाय नमः ह्रीं बन्धकर्त्रे नमः
ह्रीं सुबन्धनविमोचनाय नमः ह्रीं सयज्ञारये नमः ह्रीं सकामारये नमः
ह्रीं महादंष्ट्राय नमः ह्रीं महायुधाय नमः ह्रीं बहुधा निन्दिताय नमः
ह्रीं शर्वाय नमः 598

ह्रीं शंकराय नमः ह्रीं शंकराय नमः ह्रीं अधनाय नमः
ह्रीं अमरेशाय नमः ह्रीं महादेवाय नमः ह्रीं विश्वदेवाय नमः
ह्रीं सुरारिघ्ने नमः ह्रीं अहिर्बुध्न्याय नमः ह्रीं अनिलाभाय नमः
ह्रीं चेकितानाय नमः ह्रीं हविषे नमः ह्रीं अजैकपदे नमः
ह्रीं कापालिने नमः ह्रीं त्रिशङ्कवे नमः ह्रीं अजिताय नमः
ह्रीं शिवाय नमः ह्रीं धन्वन्तरये नमः ह्रीं धूमकेतवे नमः

ह्रीं स्कन्दाय नमः ह्रीं वैश्रवणाय नमः ह्रीं धात्रे नमः
ह्रीं शक्राय नमः ह्रीं विष्णवे नमः ह्रीं मित्राय नमः
ह्रीं त्वष्ट्रे नमः ह्रीं ध्रुवाय नमः ह्रीं धराय नमः
ह्रीं प्रभावाय नमः ह्रीं सर्वगाय वायवे नमः ह्रीं अर्यम्णे नमः
ह्रीं सवित्रे नमः
629

ह्रीं रवये नमः ह्रीं उषंगवे नमः ह्रीं विधात्रे नमः
ह्रीं मान्धात्रे नमः, ह्रीं भूतभावनाय नमः ह्रीं विभवे नमः
ह्रीं वर्णविभाविने नमः ह्रीं सर्वकामगुणावहाय नमः ह्रीं पद्मनाभाय नमः
ह्रीं महागर्भाय नमः ह्रीं चन्द्रवक्त्राय नमः ह्रीं अनिलाय नमः
ह्रीं अनलाय नमः ह्रीं बलवते नमः ह्रीं उपशान्ताय नमः
ह्रीं पुराणाय नमः ह्रीं पुण्यचञ्चुरिणे नमः ह्रीं कुरूकर्त्रे नमः
ह्रीं कुरूवासिने नमः ह्रीं कुरूभूताय नमः ह्रीं गुणौषधाय नमः
ह्रीं सर्वाशयाय नमः ह्रीं दर्भचारिणे नमः ह्रीं सर्वेषां प्राणिनां पतये नमः
ह्रीं देवदेवाय नमः ह्रीं सुखासक्ताय नमः ह्रीं सते नमः
ह्रीं असते नमः ह्रीं सर्वरत्नविदे नमः ह्रीं कैलासगिरिवासने नमः
ह्रीं हिमवद्गिरिसंश्रयाय नमः 660
ह्रीं कूलहारिणे नमः ह्रीं कुलकर्त्रे नमः ह्रीं बहुविद्याय नमः
ह्रीं बहुप्रदाय नमः ह्रीं वणिजाय नमः ह्रीं वर्धकिने नमः
ह्रीं वृक्षाय नमः ह्रीं बकुलाय नमः ह्रीं चन्दनाय नमः
ह्रीं छदाय नमः ह्रीं सारग्रीवाय नमः ह्रीं महाजत्रवे नमः
ह्रीं अलोलाय नमः ह्रीं महौषधाय नमः ह्रीं सिद्धार्थकारिणे नमः
ह्रीं सिद्धार्थाय नमः ह्रीं छन्दोव्याकरणोत्तराय नमः ह्रीं सिंहनादाय नमः
ह्रीं सिंहदंष्ट्राय नमः ह्रीं सिंहगाय नमः ह्रीं सिंहवाहनाय नमः
ह्रीं प्रभावात्मने नमः ह्रीं जगत्कालस्थालाय नमः ह्रीं लोकहिताय नमः
ह्रीं तरवे नमः ह्रीं सारंगाय नमः ह्रीं नवचक्रांगाय नमः
ह्रीं केतुमालिने नमः ह्रीं सभावनाय नमः ह्रीं भूतालयाय नमः
ह्रीं भूतपतये नमः 691

ह्रीं अहोरात्राय नमः ह्रीं अनिन्दिताय नमः ह्रीं सर्वभूतानां वाहित्रे नमः
ह्रीं सर्वभूतानां निलयाय नमः ह्रीं विभवे नमः ह्रीं भवाय नमः

ह्रीं अमोघाय नमः ह्रीं संयताय नमः ह्रीं अश्वाय नमः
700

ह्रीं भोजनाय नमः ह्रीं प्राणधारणाय नमः ह्रीं धृतिमते नमः
ह्रीं मतिमते नमः ह्रीं दक्षाय नमः ह्रीं सत्कृताय नमः
ह्रीं युगाधिपाय नमः ह्रीं गोपालाय नमः ह्रीं गोपतये नमः
ह्रीं ग्रामाय नमः ह्रीं गोचर्मवसनाय नमः ह्रीं हरये नमः
ह्रीं हिरण्यबाहवे नमः ह्रीं प्रवेशिनां गुहापालाय नमः ह्रीं प्रकृष्टारये नमः
ह्रीं महाहर्षाय नमः ह्रीं जितकामाय नमः ह्रीं जितेन्द्रियाय नमः
ह्रीं गांधाराय नमः ह्रीं सुवासाय नमः ह्रीं तपःसक्ताय नमः
ह्रीं रतये नमः
722

ह्रीं नराय नमः ह्रीं महागीताय नमः ह्रीं महानृत्याय नमः
ह्रीं अप्सरोगणसेविताय नमः ह्रीं महाकेतवे नमः ह्रीं महाधातवे नमः
ह्रीं नैकसानुचराय नमः ह्रीं चलाय नमः ह्रीं आवेदनीयाय नमः
ह्रीं आदेशाय नमः ह्रीं सर्वगंधसुखावहाय नमः ह्रीं तोरणाय नमः
ह्रीं तोरणाय नमः ह्रीं वाताय नमः ह्रीं परिध्यै नमः
ह्रीं पतिखेचराय नमः ह्रीं संयोगवर्धनाय नमः ह्रीं वृद्धाय नमः
ह्रीं अतिवृद्धाय नमः ह्रीं गुणाधिकाय नमः ह्रीं नित्याय आत्मसहायाय नमः
ह्रीं देवासुरपतये नमः ह्रीं पत्ये नमः ह्रीं युक्ताय नमः
ह्रीं युक्तबाहवे नमः ह्रीं देवाय दिविसुपर्वणाय नमः ह्रीं आषाढाय नमः
ह्रीं सुषाढ़ाय नमः ह्रीं ध्रुवाय नमः ह्रीं हरिणाय नमः
ह्रीं हराय नमः 753

ह्रीं आवर्तमानेभ्यो वपुषे नमः ह्रीं वसुश्रेष्ठाय नमः ह्रीं महापथाय नमः
ह्रीं विमर्शाय शिरोहारिणे नमः ह्रीं सर्वलक्षणलक्षिताय नमः
ह्रीं अक्षाय रथयोगिने नमः ह्रीं सर्वयोगिने नमः ह्रीं महाबलाय नमः
ह्रीं समाम्नायाय नमः ह्रीं असमाम्नायाय नमः ह्रीं तीर्थदेवाय नमः
ह्रीं महारथाय नमः ह्रीं निर्जीवाय नमः ह्रीं जीवनाय नमः
ह्रीं मंत्राय नमः ह्रीं शुभाक्षाय नमः ह्रीं बहुकर्कशाय नमः
ह्रीं रत्नप्रभूताय नमः ह्रीं रत्नांगाय नमः ह्रीं महार्णवनिपानविदे नमः
ह्रीं मूलाय नमः ह्रीं विशालाय नमः ह्रीं अमृताय नमः

ह्रीं व्यक्ताव्यक्ताय नमः ह्रीं तपोनिधये नमः ह्रीं आरोहणाय नमः
ह्रीं अधिरोहाय नमः ह्रीं शीलधारिणे नमः ह्रीं महायशसे नमः
ह्रीं सेनाकल्पाय नमः ह्रीं महाकल्पाय नमः 784

ह्रीं योगाय नमः, ह्रीं युगकराय नमः ह्रीं हरये नमः
ह्रीं युगरूपाय नमः ह्रीं महारूपाय नमः ह्रीं महानागहनाय नमः
ह्रीं अवधाय नमः ह्रीं न्यायनिर्वपणाय नमः ह्रीं पादाय नमः
ह्रीं पण्डिताय नमः ह्रीं अचलोपमाय नमः ह्रीं बहुमालाय नमः
ह्रीं महालयाय नमः ह्रीं शशिने हरसुलोचनाय नमः
ह्रीं विस्ताराय नवणाय कूपाय नमः (८००)

ह्रीं त्रियुगाय नमः ह्रीं सफलोदयाय नमः ह्रीं त्रिलोचनाय नमः
ह्रीं विषण्णांगाय नमः ह्रीं मणिविद्धाय नमः ह्रीं जटाधराय नमः
ह्रीं विन्दवे नमः ह्रीं विसर्गाय नमः ह्रीं सुमुखाय नमः
ह्रीं शराय नमः, ह्रीं सर्वायुधाय नमः ह्रीं सहाय नमः,
ह्रीं निवेदनाय नमः ह्रीं सुखाजाताय नमः ह्रीं सुगन्धाराय नमः
814
ह्रीं महाधनुषे नमः ह्रीं भगवते गंधपालिने नमः ह्रीं सर्वकर्मणामुत्थानाय नमः
ह्रीं मन्थानाय बहुलाय वायवे नमः ह्रीं सकलाय नमः ह्रीं सर्वलोचनाय नमः
ह्रीं तलस्तालाय नमः ह्रीं करस्थालिने नमः ह्रीं ऊर्ध्वसंहननाय नमः
ह्रीं महते नमः ह्रीं छात्राय नमः ह्रीं सुच्छत्राय नमः
ह्रीं विख्यातलोकाय नमः ह्रीं सर्वाश्रयाय क्रमाय नमः ह्रीं मुण्डाय नमः
ह्रीं विरूपाय नमः ह्रीं विकृताय नमः, ह्रीं दण्डिने नमः
ह्रीं कुण्डिने नमः ह्रीं विकुर्वाणाय नमः ह्रीं हर्यक्षाय नमः
ह्रीं ककुभाय नमः ह्रीं वज्रिणे नमः ह्रीं शतजिह्वाय नमः
ह्रीं सहस्त्रपादे सहस्त्रमूर्ध्ने नमः ह्रीं देवेन्द्राय नमः ह्रीं सर्वदेवमयाय नमः
ह्रीं गुरवे नमः ह्रीं सहस्त्रबाहवे नमः ह्रीं सर्वाङ्गाय नमः
844

ह्रीं शरण्याय नमः ह्रीं सर्वलोककृते नमः ह्रीं पवित्राय नमः
ह्रीं त्रिककुन्मंत्राय नमः ह्रीं कनिष्ठाय नमः ह्रीं कृष्णपिंगलाय नमः

ह्रीं ब्रह्मदण्डविनिर्मात्रे नमः ह्रीं शतघ्नीपाशशक्तिमते नमः ह्रीं पद्मगर्भाय नमः
ह्रीं महागर्भाय नमः ह्रीं ब्रह्मगर्भाय नमः ह्रीं जलोद्भवाय नमः
ह्रीं गभस्तये नमः ह्रीं ब्रह्मकृते नमः ह्रीं ब्रह्मणे नमः
ह्रीं ब्रह्मविदे नमः ह्रीं ब्राह्मणाय नमः ह्रीं गतये नमः
ह्रीं अनन्तरूपाय नमः ह्रीं नैकात्मने नमः ह्रीं स्वयंभुवाय तिग्मतेजसे नमः
ह्रीं उर्ध्वगात्मने नमः ह्रीं पशुपतये नमः ह्रीं वातरंहसे नमः
ह्रीं मनोजवाय नमः ह्रीं चन्दनिने नमः ह्रीं पद्मनालाग्राय नमः
ह्रीं सुरभ्युत्तरणाय नमः ह्रीं नराय नमः
ह्रीं कर्णिकारमहास्त्रग्विणे नमः ह्रीं नीलमौलये नमः
875

ह्रीं पिनाकधृते नमः ह्रीं उमापतये नमः, ह्रीं उमाकान्ताय नमः,
ह्रीं जाह्नवीधृषे नमः ह्रीं उमाधवाय नमः, ह्रीं वराय वराहाय नमः,
ह्रीं वरदाय नमः ह्रीं वरेण्याय नमः ह्रीं सुमहास्वनाय नमः
ह्रीं महाप्रसादाय नमः ह्रीं दमनाय नमः ह्रीं शत्रुघ्ने नमः
ह्रीं श्वेतपिंगलाय नमः ह्रीं पीतात्मने नमः ह्रीं परमात्मने नमः
ह्रीं प्रयतात्मने नमः
ह्रीं प्रधानधृते नमः ह्रीं सर्वपार्श्वमुखाय नमः ह्रीं त्र्यक्षाय नमः
ह्रीं धर्मसाधारणाय वराय नमः ह्रीं चराचरात्मने नमः ह्रीं सूक्ष्मात्मने
ह्रीं अमृताय गोवृषेश्वराय नमः ह्रीं साध्यर्षये नमः ह्रीं आदित्याय वसवे नमः
ह्रीं विवस्ते सवितामृताय नमः ह्रीं व्यासाय नमः
ह्रीं सुसंक्षेपाय विस्तराय यर्गाय नमः
ह्रीं पर्ययाय नराय नमः ह्रीं ऋतवे नमः
905

ह्रीं संवत्सराय नमः ह्रीं मासाय नमः ह्रीं पक्षाय नमः
ह्रीं संख्यासमापनाय नमः ह्रीं कलाभ्यो नमः ह्रीं काष्ठाभ्यो नमः
ह्रीं लवेभ्यो नमः ह्रीं मात्राभ्यो नमः ह्रीं मुहूर्ताहः क्षपाभ्यो नमः
ह्रीं क्षणेभ्यो नमः ह्रीं विश्वक्षेत्राय नमः ह्रीं प्रजाबीजाय नमः
ह्रीं लिंगाय नमः ह्रीं आद्याय निर्गमाय नमः ह्रीं सते नमः
ह्रीं असते नमः ह्रीं व्यक्ताय नमः ह्रीं अव्यक्ताय नमः
ह्रीं पित्रे नमः ह्रीं मात्रे नमः ह्रीं पितामहाय नमः
ह्रीं स्वर्गद्वाराय नमः ह्रीं प्रजाद्वाराय नमः ह्रीं मोक्षद्वाराय नमः

ह्रीं त्रिविष्टपाय नमः ह्रीं निर्वाणाय नमः ह्रीं ह्लादनाय नमः
ह्रीं ब्रह्मलोकाय नमः ह्रीं परस्यै गतये नमः ह्रीं देवासुरविनिर्मात्रे नमः
ह्रीं देवासुरपरायणाय नमः 936

ह्रीं देवासुरगुरूवे नमः ह्रीं देवाय नमः ह्रीं देवासुरनमस्कृताय नमः
ह्रीं देवासुरमहामात्राय नमः ह्रीं देवासुरगणाश्रयाय नमः ह्रीं देवासुगणाध्यक्षाय नमः
ह्रीं देवासुरगणाग्रण्ये नमः ह्रीं देवातिदेवाय नमः ह्रीं देवर्षये नमः
ह्रीं देवासुरवरप्रदाय नमः ह्रीं देवासुरेश्वराय नमः ह्रीं विश्वस्मै नमः
ह्रीं देवासुरमहेश्वराय नमः ह्रीं सर्वदेवमयाय नमः ह्रीं अचिन्त्याय नमः
ह्रीं देवतात्मने नमः ह्रीं आत्मसंभवाय नमः ह्रीं उद्भिदे नमः
ह्रीं त्रिविक्रमाय नमः, ह्रीं वैद्याय नमः ह्रीं विरजाय नमः
ह्रीं नीरजासे नमः ह्रीं अमराय नमः ह्रीं ईड्याय नमः,
ह्रीं हस्तीश्वराय नमः ह्रीं व्याघ्राय नमः ह्रीं देवसिंहाय नमः
ह्रीं नरर्षभाय नमः ह्रीं विबुधाय नमः ह्रीं अग्रवराय नमः
ह्रीं सूक्ष्माय नमः
967

ह्रीं सर्वदेवाय नमः ह्रीं तपोमयाय नमः ह्रीं सुयुक्ताय नमः
ह्रीं शोभनाय नमः, ह्रीं वज्रिणे नमः ह्रीं प्रासानां प्रभवाय नमः
ह्रीं अव्ययाय नमः ह्रीं गुहाय नमः ह्रीं कान्ताय नमः
ह्रीं निजाय सर्गाय नमः ह्रीं पवित्राय नमः ह्रीं सर्वपावनाय नमः
ह्रीं श्रृंगिणे नमः ह्रीं श्रृंगप्रियाय नमः ह्रीं बभ्रवे नमः
ह्रीं राजराजाय नमः ह्रीं निरामयाय नमः ह्रीं अभिरामाय नमः
ह्रीं सुरगणाय नमः ह्रीं विरामाय नमः, ह्रीं सर्वसाधनाय नमः,
988

ह्रीं ललाटाक्षाय नमः ह्रीं विश्वदेवाय नमः ह्रीं हरिणाय नमः
ह्रीं ब्रह्मवर्चसे नमः ह्रीं स्थावराणां पतये नमः ह्रीं नियमेन्द्रियवर्धनाय नमः
ह्रीं सिद्धार्थाय नमः ह्रीं सिद्धभूतार्थाय नमः ह्रीं अचिन्त्याय नमः,
ह्रीं सत्यव्रताय नमः ह्रीं शुचये नमः ह्रीं व्रताधिपाय नमः
ह्रीं परस्मै नमः ह्रीं ब्रह्मणे नमः ह्रीं भक्तानां परमायै गतये नमः
ह्रीं विमुक्ताय नमः ह्रीं मुक्ततेजसे नमः ह्रीं श्रीमते नमः
ह्रीं श्रीवर्धनाय नमः ह्रीं जगते नमः 1000

पूजा का वास्तविक भाव यह है कि भगवत् विग्रह की समर्चना में जो जो क्रिया सम्पन्न की जा रही है, वह वह क्रिया मानसोपचार से भावपूर्वक हृदयस्थ प्राणेश्वर प्रभु को समर्पित की जायें। अन्तरंग तथा बहिरंग (अन्तर्मुख तथा बहिर्मुख) उभय भाव में ऐक्य रहे, यही सगुण साकार पूजा का साफल्य है। जैसे- भगवान को स्नान करा रहे हैं तो हृदयस्थ प्रभु को भी स्नान करायें, बाहर आरती हो रही है तो अन्दर भी आरती हो, वाणी से स्तुति करें तो हृदय वीणा का तार तार परमानन्द से झंकृत होवें। उस समय हास परिहास न करके आनन्दपूर्ण उल्लासभरा मनोभाव होना चाहिए।

विशेष आग्रह-

हे धर्मपरम्परा के आदर्श ऋषि! वंश के सम्मानित प्रतिनिधि! भारतवर्ष के समुन्नायक महानुभाव! देवपूजा, धार्मिक अनुष्ठान, आध्यात्मिक आयोजन अथवा सामाजिक समागम के उपरान्त जो परिदृश्य बनता है, वह हमारी संस्कृति, शिक्षा, संस्कार तथा प्रतिफल का संकेतक होता है। अतः पूजा के उपरान्त हम भक्ति के नाम पर गन्दगी करके न हटें। बल्कि वहाँ एकदम स्वच्छता होनी चाहिए। उडती पोलीथिन, बिखरी पत्तलें, गिलासें, भिनकती मक्खियों के पैरों तले तिरस्कृत सी होती पूजा सामग्री, कितना बुरा लगता है।

आपको सावधान होना होगा। सबसे पहले नियम लें कि हम पूजा में पोलीथिन प्लास्टिक गिलास थर्माकोल के पत्तलादि, कांच चीनी मिट्टी के बर्तन, यथासंभव स्टील के बर्तन भी प्रयोग नहीं करेंगे। प्राकृतिक पत्तल दोना पीतल आदि के बर्तन ही पूजा में प्रयुक्त होने चाहिए। तनिक सी भी

गन्दगी पूजा स्थान पर न रहे। मंदिर, नदीतट, धर्मशाला, आश्रम कोई भी स्थान हो उसको स्वच्छ करके, कूड़ा कूड़ेदान में या गड्ढा खोदकर दबायें।

प्र.१- प्रदोषकाल में शिवपूजा ही क्यों अन्य देवताओं की पूजा क्यों नही ?

उत्तर- उपर्युक्त प्रश्न के उत्तर में स्कन्द महापुराण (एकाशीति-साहस्री संहिता, तृतीय ब्रह्मोत्तर खण्ड, प्रदोषव्रतमाहात्म्य वर्णन) के अन्तर्गत ऋषि शाण्डिल्य का वक्तव्य उद्धरण योग्य है-

प्रदोष में भगवान् शिव की पूजा न करके मनुष्य दरिद्रता को प्राप्त करते हैं ।।71।। मैं सत्य कहता हूँ, परलोक में हित की बात कहता हूँ, शास्त्रों का सार एवं उपनिषदों का हृदय (रहस्य) कहता हूँ, इस भयंकर असार संसार को प्राप्त हुए जीव के लिए ईश्वर के चरणारविन्दों की सेवा ही सार वस्तु है ।।72।। जो प्रदोष काल में अनन्यचित्त होकर परमेश्वर के चरणारविन्दों की पूजा करते हैं, वे इसी संसार में सदा बढ़ने वाले धन धान्य, स्त्री-पुरुष, सौभाग्य और सम्पत्ति के द्वारा सबसे बढ़कर होते हैं। ।।73।। प्रदोषकाल में कैलाश पर्वत के रजतभवन में स्वर्ण मण्डित रत्न-सिंहासन पर त्रैलोक्य-भगवती गौरी को विराजमान करके भगवान् शूलपाणि श्री शिव के इच्छापूर्वक नृत्य करने के लिये उद्यत होने पर सभी देवगण उनकी सेवा में संलग्न रहते हैं ।।74।। जो मनुष्य प्रदोष काल में भगवान् शिव का पूजन न करके

अन्यत्र व्यस्तरहते हैं, तथा जो अपने कर्ण पुटकों से भगवान् शंकर की कथा का पान नहीं करते, वे मूर्खजन प्रत्येक जन्म में दरिद्र होते हैं ।।75।। उस समय वाणी की देवी सरस्वती वीणा वादन करती हैं, इन्द्र

बाँसुरी बजाते हैं, ब्रह्मा जी ताल दे दे कर उल्लसित करते हैं, श्रीविष्णु कुशलतापूर्वक निरन्तर मृदंग बजाते हैं और भगवती रमा गायन कार्य में निमग्न हैं तथा समस्त देवता चारों ओर स्थित होकर मृडानी-पति भगवान् महादेव का अनुसेवन करते हैं ।।76।। गन्धर्व, यक्ष, पतग-उरग, सिद्ध, साध्य, विद्याधर, श्रेष्ठ देव-गण एवं अप्सराओं के समूह और अन्य त्रिलोकी में रहने वाले शिवोपासक-भूतवर्गों के साथ प्रदोष समय प्राप्त होने पर श्रीशिव के समीप उपस्थित हो जाते हैं ।।77।। **इस लिये प्रदोष काल में एक मात्र भगवान् शिव की पूजा करनी चाहिए, इस समय में हरि, ब्रह्मा आदि पूजनीय नहीं हैं, प्रदोष-काल में भगवान् महेश के विधिपूर्वक पूजित होने पर सभी सुराधिनाथ प्रसन्न हो जाते हैं** ।।78।। ब्राह्मणी! तुम्हारा यह पुत्र पूर्व जन्म में उत्तम ब्राह्मण था, इसने सारी आयु केवल दान लेने में बिताई है, यज्ञ आदि कर्म नहीं किये हैं ।।79।। इसीलिये यह दरिद्रता को प्राप्त हुआ। उस दोष का निवारण करने के लिए अब यह भगवान् शंकर की शरण में जाएं ।।80।। **(स्कन्द ब्रह्मोत्तर प्रदोष महात्म्य)**

प्र.२- दूर्वा, शमी, बिल्वपत्रादि चढ़ाने का फल क्या है?

उत्तर- दूर्वांकुरं तु हरये पूजाकाले प्रयच्छति।
पूजाफलं शतगुणं सम्यगाप्नोति मानवः।।

दूर्वा चढ़ाने से पूजा का फल १०० गुना बढ़ जाता है।

शमीपत्रैश्च देवेशं पूजयन्त्यसुरद्विषम्।
यममार्गं महाघोरं न ते पश्यन्ति नारद!।।

शमी पत्र के चढ़ाने से मनुष्य यमराज के घर नहीं जाते, देवलोक जाते हैं।

धात्रीपत्रैर्बिल्वपत्रैस्तथैवाश्वत्थपत्रकैः।

नवीनैर्मृदुभिर्ये च पूजयन्ति जनार्दनम् ।।

आंवला पत्र, बिल्व पत्र, पीपल पत्र, अशोक पत्रों द्वारा जो देव की पूजा करते हैं वे वैकुण्ठ को जाते हैं।

न तेषां पुनरावृत्तिः वैकुण्ठाज्जायते द्विज!।
धात्री धुनोति पापानि शमी शमयतेऽशुभान्।।

आंवला पापनाशक तथा शमी अशुभ नाशक होता है।

दुर्वा हरति दुःखानि तुलसी सर्वकामदा।
श्रियं ददति बैल्वानि अश्वत्थान्यारोग्यसम्पदः।।

दुर्वा दुखहंत्री, तुलसी सर्वकामप्रद, बिल्व लक्ष्मीप्रद, पीपल आरोग्य तथा सम्पत्ति प्रदायक कहे गये हैं।

प्र.३- संकल्प क्यों करते है?

उत्तर- 1. जलस्थ वरुण देव हमारे कर्म के साक्षी है। 2. संकल्प के बिना कर्म फलप्रद नहीं होता। 3. मानसिक भाव की दृढता हेतु। 4. सृष्टि क्रम से युग आदि का स्मरण तथा अपनी पवित्र ऋषि परम्परा, (गोत्र प्रवर्तक ऋषियों की स्मृति) कुल परम्परा का स्मरण करने हेतु। 5. पत्र बहुत अच्छा हो पर उस पर पता न लिखा हो तो सब व्यर्थ है, वैसे ही संकल्प के बिना कोई भी कर्म व्यर्थ ही है।

प्र.४- माथे पर तिलक क्यों लगाते है?

उत्तर- मस्तिष्क को शीतलता, सकारात्मकता, शुचिता देने के साथ साथ आज्ञाचक्र के त्वरित जागरण का दिव्य सूक्ष्म गोपनीय संस्कार है तिलक करना। श्री, शोभा, सम्पत्ति, सम्मान देने वाला है तिलक।

प्र.५- पंचामृत से स्नान कराने का लाभ क्या है?

उत्तर- दूध से सात्विकता, दहि से निर्मलता, घृत से स्निग्धता व पौष्टिकता, मधु से सुन्दरता, शर्करा से मधुरता आती है।

प्र.६- दक्षिणा से तात्पर्य क्या है?

उत्तर- दक्षिणा पूजा का अंग है। यज्ञ, देवपूजा तथा विप्रभोजन, दक्षिणा के बिना अपूर्ण माना जाता है। (लक्ष्मी स्वरूप है दक्षिणा।) यदि भगवान ने सामर्थ्य दिया है, तो नित्य कुछ द्रव्य दान पात्र में धर्मार्थ रख देना चाहिए। यह दक्षिणा भी उठाकर उसी में रख दें।

प्र.७- क्या पुरुषों को पूजा के समय सिर पर पगड़ी, टोपी, रुमाल आदि रखना चाहिए अथवा नहीं ?

उत्तर- पूजा के समय मस्तक ढका नहीं रहना चाहिए । टोपी, पगड़ी, रुमाल नहीं होना चाहिए, तथा भोजन के समय भी टोपी पगड़ी आदि निषिद्ध हैं।

सोष्णीसो न च कर्तव्यं भोजनं देवपूजनम् ॥ (शिष्टोक्त)

पगड़ी पंजाब की संस्कृति से प्रभावित रही है, वहॉ संकट में पड़े हुए लोग सदा पगड़ी इस लिए बांधे रहते थे कि न जाने कब युद्ध करना पड़े। अतः सर्वदा सावधान रहना पड़ता था।

माताओं को सिर से कपड़ा नहीं हटाना चाहिए। उनका सिर ढका रहना ही शास्त्रीय दृष्टि से उचित है।

प्र.८- पंचाक्षर मंत्र जप की विधि क्या है?

उत्तर- यज्ञोपवीतधारी द्विज "ॐ नमः शिवाय" जपें। बिना यज्ञोपवीत वाले तथा महिलाएं "शिवाय नमः, रामाय नमः, कृष्णाय नमः" अथवा शाक्त-प्रणव "ह्रीं" लगाकर जप सकते हैं, यथा- "ह्रीं शिवाय नमः"।

बिना गुरु परम्परा के तथाकथित स्वयंभू गुरुओं से अथवा स्वयं पुस्तक से पढ़कर मन्त्र जपादि नहीं करना चाहिए।

द्विजानां च नमः पूर्वमन्येषां च नमोन्तकम् ।
स्त्रीणामपि इच्छन्ति नमोऽन्तं च यथाविधि ॥ (शिव पुराण)

प्र.९- शालिग्राम तथा नर्मदेश्वर की पूजा कौन कर सकता है?

उत्तर- शालिग्राम तथा नर्मदेश्वर की पूजा यज्ञोपवीत धारी सदाचारी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य को ही करनी चाहिए।

माताओं को तथा द्विजेतर बन्धुओं को शालिग्राम व नर्मदेश्वर की पूजा नहीं करनी चाहिए । क्योंकि प्रत्येक क्रिया की कोई न कोई विधि होती है, और विधि-निषेध में व्यक्ति का तर्क नहीं, शास्त्र-वचन ही प्रमाण है। शास्त्रों ने ही कहा कि नर्मदा का कंकर शंकर है, गंडकी की शिला शालिग्राम है। तब हमारा विश्वास बना, अन्यथा देखने में सभी पत्थर एक समान ही हैं, सभी में भगवान को मान लो। जिन शास्त्रों के निर्देश पर हमको नर्मदेश्वर शालिग्राम का ज्ञान मिला, उन शास्त्रों ने ही विधि-निषेध का विचार किया है। आत्मकल्याण के लिए यह आवश्यक भी है कि शास्त्रों की आज्ञा का पालन करें। गीता में भगवान कहते हैं- शास्त्रविधि को जानकर ही कर्म करने में लाभ है।

ज्ञात्वा शास्त्रं विधानोक्तं कर्मकर्तुमिहार्हसि।

शास्त्र-विधि का उल्लंघन करके सिद्धि तथा शुभ गति संभव नहीं है।

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्॥

प्र.१०-पूजा के उपरान्त आसन के नीचे जल डालकर वहां की मिट्टी माथे से क्यों लगायें?

उत्तर- "शक्राय नमः" कहकर आसन के नीचे की संरक्षित अव्यक्त ऊर्जा को आप माथे से स्वीकार न करेंगे, तो उस पूजा के फल को आसुरीय शक्तियां प्राप्त कर लेंगी। स्वाभाविकतया मनुष्य के जीवन में प्रतिदिन ५ प्रकार के अज्ञात अपराध होते रहते हैं, जिनको हमने गंभीरता से न कभी सोचा, न देखा, न जाना, परन्तु महर्षियों की ऋतम्भरा प्रज्ञा ने हमारे कल्याण हेतु उनका संकेत भी किया, सिद्ध भी किया, उसका समाधान भी बताया है।

पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥

ध्यानदेने हेतु-

1-पूजनमें जिस सामग्रीकी कमी हो, उसकी पूर्ति मानसिक भावनासे करनी चाहिये- **'असम्पन्नं मनसा सम्पादयेत्'।**

जैसे- **आसनं मनसा परिकल्पयामि, पुष्पमालां मनसा परिकल्पयामि इत्यादि।**

२- दूसरा विकल्प है, उस-उस सामग्रीके लिये अक्षत-पुष्प चढ़ा दे-

तत्तद् द्रव्यं तु संकल्प्य पुष्पैर्वापि समर्चयेत्।
अर्चनेषु विहीनं यत् तत्तोयेन प्रकल्पयेत्॥

३- केवल नैवेद्य चढ़ानेसे अथवा केवल चन्दन, पुष्प चढ़ानेसे भी पूजा मान ली जाती है।

केवलनैवेद्यसमर्पणेनैव पूजासिद्धिरिति।

गन्धपुष्पसमर्पणमात्रेण पूजासिद्धिरित्यपि पूर्वे। (आचारेन्दु)